ISSN 2394-8485

मासिक

गुरमत ज्ञान

३/-

फाल्गुन-चैत्र संवत् नानकशाही ५५४-५५ मार्च 2023 वर्ष १६ अंक ७

अकाली फूला सिंघ जी

अकाली फूला सिंघ जी की यह प्रसिद्ध पेंटिंग
गुइमेट नेशनल म्यूज़ियम ऑफ एशियन आर्ट्स,
पेरिस, फ्रांस में संरक्षित है।
यह पेंटिंग लाहौर के इमाम बख़्श ने तैयार की थी।

ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि।।

गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ॥

मासिक

गुरमत ज्ञान

फाल्गुन-चैत्र, संवत् नानकशाही 554-55
वर्ष 16 अंक 7 मार्च 2023

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा	
सालाना (देश)	10 रुपये
आजीवन (देश)	100 रुपये
सालाना (विदेश)	250 रुपये
प्रति कापी	3 रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

श्री अमृतसर साहिब -143006

फोन : 0183-2553956-60

एक्सटेंशन नंबर

वितरण विभाग 303 संपादन विभाग 304

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार 4

संपादकीय 6

भाई मरदाना जी 8
—स. सुरजीत सिंघ

प्रेम और ममता की घनी छाँव : माता खीवी जी 10
—डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल

परमात्मा-भक्ति के रंगों का उत्सव : होला-महल्ला 13
-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ

भाई सुबेग सिंघ— भाई शाहबाज सिंघ 19
—डॉ. मनजीत कौर

लासानी योद्धा अकाली फूला सिंघ 24
- स. सुखचैन सिंघ लायलपुरी

निहंग सिंघों की गतका-कला 28
-डॉ. आतमा सिंघ

लबु त कूड़ा नेहु 36
-डॉ.परमजीत कौर

वर्तमान समय में महिलाओं की दशा पर चिंतन व मनन 40
-डॉ. कशमीर सिंघ नूर

यू. पी. सिक्ख मिशन, हापुड़ की स्थापना 44
-स. ब्रिजपाल सिंघ

खबरनामा 48

गुरबाणी विचार

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥
जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२ ॥ *(पन्ना १३३)*

पंचम सतिगुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में चेत्र मास की ऋतु और इससे संबंधित क्रियाओं के बारे में सांकेतिक वर्णन करते हुए मनुष्य-मात्र को मनुष्य जीवन रूपी वर्ष के इस काल-खंड को प्रभु-नाम-चिंतन-मनन द्वारा सफल करने का निर्मल उपदेश देते हुए गुरमति मार्ग बख्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी कथन करते हैं कि चेत्र मास में मालिक परमात्मा को स्मरण किया जाए तो बहुत ही गहरी प्रसन्नता मिलती है। यदि इस समय अच्छे मनुष्यों की संगत करते हुए जिह्वा से प्रभु-नाम जपा जाए तो मालिक स्वामी प्राप्त हो जाते हैं। जिसने ऐसा सुकर्म कर प्रभु को पा लिया है उसी मनुष्य का इस संसार में आना सफल गिना जाए, चूंकि मनुष्य-जीवन का मूल प्रयोजन यही है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ *(पन्ना १२)*

गुरु पातशाह प्रत्येक क्षण प्रभु-नाम को समर्पित करने का दिशा-निर्देश बख्शिश करते हुए बाणी में फरमान करते हैं कि परमात्मा की पावन स्मृति के बगैर यदि एक पल भी जीया जाए तो सारा जीवन ही व्यर्थ हो जाता है। जो परमात्मा जल में, आकाश में, धरती पर व्याप्त हो रहा है, यदि ऐसा मालिक मनुष्य को याद ही न आए तो उसका कितना दुर्भाग्य होगा! दूसरी ओर

जिन्होंने परमात्मा को याद किया है वे बहुत ही भाग्यशाली अथवा महान हैं। ऐसे सुजनों को देखकर मन परमात्मा के दीदार की कामना करता है, मन में उसके दीदार की प्यास बनी रहती है। चेत्र मास में जो मुझे परमात्मा से मिला दे मैं उसके चरण छू लूँ!

बारह माहा मांझ की पहली पावन पउड़ी, जिससे यह पावन बाणी प्रारंभ होती है, इस प्रकार है :

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥
स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१ ॥ *(पन्ना १३३)*

अर्थात् हे परमात्मा! हम अपने कर्मों की कमाई के अनुसार अर्थात् सुकर्मों को निभाने में कुछ कमी रह जाने के कारण आपसे बिछड़े हुए हैं। सनम्र विनती है कि आप अपनी कृपा कर हमें अपने साथ मिला लो। चारों दिशाओं में भटकने के उपरांत हम अंत में आपकी शरण में आए हैं। दूध देने से रहित गाय किसी काम नहीं आती। जल न मिले तो वृक्ष अथवा पौधा सूख जाता है। यदि असल मित्र-प्रभु का नाम ही न मिल पाया तो आराम कहां ? जिस हृदय रूपी घर में प्रभु-पति प्रकट नहीं होते वह हृदय रूपी घर भट्ठी जैसा दुखदायक प्रतीत होता है। प्रभु मालिक के बिना मनुष्य रूपी स्त्री का सारा शृंगार व्यर्थ है अथवा बाहरी दिखावे के सभी प्रयास निष्फल हैं। मालिक के बिना बाहरी रूप से मित्र दिखने वाले सभी जन शत्रु हैं। ऐसी स्थिति में हृदय से एक ही विनती निकलती है कि हे स्वामी! कृपा कर अपना नाम प्रदान कर दो! हे मालिक! मुझे अपने साथ मिला लेना, क्योंकि एक आप ही का नाम सदैव स्थिर है!

संपादकीय

होला-महल्ला : आदर्श प्रेरणा का स्रोत

मनुष्य की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, सभ्याचारक तथा मानसिक गुलामी के विरुद्ध श्री गुरु नानक देव जी द्वारा ज़ोरदार आवाज़ बुलंद की गयी। इन गुलामियों ने मनुष्य को इतना निर्बल कर दिया था कि उसने विवशतापूर्ण इन परिस्थितियों में ही विचरण करना आदत बना लिया था। सदियों से गुलामी झेलते हुए हिंदोस्तानी लोग इसके आदी होकर गुलामी को ही अपनी तकदीर मानने लग गए थे। उस समय हिंदोस्तान के लोगों को शस्त्र धारण करने, घुड़सवारी करने, दसतार सजाने आदि की सख़्त मनाही थी । दसतार केवल वही सजा सकता था जिसको बादशाह की तरफ से दरबारी बख़्शी गयी होती थी । घुड़सवारी करना, निशान, नगाड़ा तथा फौज रखना हुकूमत के विरुद्ध बगावत समझी जाती थी तथा उल्लंघन करने वाले की सज़ा मृत्यु एवं घर-बार का उजाड़ा था। यही कारण था कि आम लोग चुपचाप अत्याचार झेल रहे थे, कोई भी हुकूमत के अत्याचार के विरुद्ध अपना मुंह नहीं खोलता था।

गुलामी की जिल्लत भरी इस जिंदगी में से भारतवासियों को निकालने के लिए गुरु साहिबान ने भरपूर प्रयत्न किए। गुरु साहिबान ने हिंदोस्तान के लोगों के सोए हुए स्वाभिमान को जगाकर उनके मन में चढ़दी कला का एहसास पैदा करने हेतु यहां मनाए जाते त्योहारों को खालसाई रूप प्रदान किया। १७५६ विक्रमी की वैसाखी वाले दिन 'पांच प्यारों' की सृजना कर लोगों को शस्त्रधारी होने के लिए प्रेरित किया । इसी तरह चेत वदी प्रथम, संवत् १७५७ विक्रमी वाले दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होलगढ़ नामक स्थान पर पहली बार 'होली' के स्थान पर 'होला-महल्ला' मनाकर सिक्खों को शस्त्र चलाने में मुहारत हासिल करने की तरफ प्रेरित किया। इसके बाद 'होला-महल्ला' सिक्खों के लिए अहम दिवस बन गया। यह दिवस आज भी होली से अगले दिन बहुत ही श्रद्धा-भावना के साथ मनाया जाता है।

गुरु साहिब ने होली के परंपरागत रूप को रद्द कर दिया, चूंकि इस दिन लोग एक-दूसरे पर गंदगी फेंकने, बुरे वचन बोलने, मदिरा पीकर हुल्लड़बाज़ी करने जैसी हरकतों को ही 'होली' का अंग समझने लग गए थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस त्योहार को नये रूप में मनाने के लिए इसका नया नाम 'होला-महल्ला' कर दिया। 'पंजाबी लोकधारा विश्व कोश' के अनुसार 'महल्ला' शब्द अरबी भाषा के शब्द 'महल्लहे' का तद्भव है, जिससे आशय उस स्थान से है, जहां फतह प्राप्त करने के उपरांत ठिकाना किया जाता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होला-महला वाले दिन सिंघों के दो दल बनाकर आपस में मनसूई (नकली) युद्ध करने की रिवायत को जारी किया । एक दल किला होलगढ़ पर काबिज़ हो जाता था, दूसरा दल उस पर हमला कर किले को छुड़ाने की कोशिश करता था। इस तरह से जंगबाज़ी

की युक्तियां तथा पैंतरेबाज़ियां सीखी एवं सिखाई जाती थीं । युद्ध में नगाड़े बज उठते, शस्त्रों के टकराने की आवाज़ पहाड़ियों में गूंज उठती, जैकारों से आसमान गूंज उठता, अंत को फ़तह की खुशी मनाते सिंघों के जत्थे सड़कों पर निकल आते। पहले 'महल्ला' शब्द इसी भाव के लिए प्रयोग किया जाता रहा । धीरे-धीरे यह शब्द उस जलूस के लिए प्रचलित हो गया जो फ़तह के उपरांत फौजी लोग सजधज कर नगाड़ों की चोट पर निकालते हैं। होला-महल्ला के नगर कीर्तन की प्रथा आज भी प्रचलित है। इन सबके पीछे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की वह दूरंदेशी सोच थी जो गुलामी तथा हुकूमती ज़ब्र के विरुद्ध उत्साह पैदा करने की पूर्ण योग्यता रखती है।

विदेशी सरकारों की तरफ से सिक्खों के इस उत्साह को कम करने की अनेक साजिशें रची गईं, परंतु गुरु के सिक्ख अपने गुरु साहिबान द्वारा प्रदान की गई सिक्ख परंपराओं पर पूरी दृढ़ता से पहरा देते हुए शहादत प्राप्त करते रहे। १९१९ ई. को वैसाखी वाले दिन अंग्रेज़ों ने सैकड़ों भारतीयों को जलियां वाला बाग में शहीद कर दिया । २७ मार्च, १९२६ ई. को होली वाले दिन ६ बब्बर अकालियों को फांसी के तख़्ते पर लटका कर शहीद कर दिया गया। भारी कष्टों को सहन करते हुए सिक्ख हमेशा पंथ एवं देश की चढ़दी कला के लिए कार्य करते रहे।

आधुनिक समय में होला-महल्ला की मौलिक भावना को उजागर करने की बहुत आवश्यक है। समाज में फिर से बहुत-सी बुराइयां तथा कुरीतियां नया रूप धारण कर प्रचलित हो चुकी हैं। आज का मनुष्य दिन-प्रतिदिन इन कुरीतियों के प्रभाव की गुलामी झेल रहा है । आज पुनः ज़रूरत है जागृत होने की, इकट्ठा होकर बुराइयों के विरुद्ध युद्ध करने की । हमारे सामने मादा भ्रूण-हत्या, नशे, नग्नता, प्रदूषण, विदेशी हमले, मातृ-भाषा का त्याग, विदेश में जाने का रुझान, सभ्याचारक संगीत में गिरावट आदि जैसी अनेक समस्याएं मुंह फैलाए खड़ी हैं। इन बुराइयों के विरुद्ध लड़ने के लिए गांव-गांव, शहर-शहर में लोगों को जागृत करना होगा, ताकि इन बुराइयों का विरोध करने वाले हर जगह पर गुरु साहिबान की शिक्षा के मुताबिक सुंदर समाज सृजित करने के लिए सफल हो सकें। बुराइयों के मुकाबले के लिए हमें अपनी पुरातन परंपराओं से प्रेरणा लेकर समस्याओं को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न करना चाहिए, ताकि होला-महल्ला पर गुरु साहिबान द्वारा हमें दिया संदेश सार्थक हो सके।

इन कार्यों के लिए हमें अपने पास के गुरुद्वारा साहिबान में संगती रूप में दीवान आयोजित करके भरपूर प्रयत्न करने चाहिए। कई गांव वाले मिलकर सार्वजनिक स्थलों पर ऐसी कोशिशें कर सकते हैं। बच्चे देश-कौम का भविष्य हुआ करते हैं। छोटे बच्चों को प्रेरित कर उनकी ज्यादा से ज्यादा शमूलियत इन समागमों में करवानी चाहिए। गांवों-महल्लों में खेल उत्सव, गुरमति समागम आदि आयोजित कर लोगों को सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जूझने की प्रेरणा दें! इस प्रकार हम गुरमति विचारधारा के पथ पर चलकर पंथक आन-शान तथा जाहो-जलाल से होला-महल्ला मनाकर मानवता की सेवा में अपना बनता योगदान दे सकते हैं ।

भाई मरदाना जी

*—स. सुरजीत सिंघ**

श्री गुरु नानक देव जी ने धार्मिक सहिष्णुता एवं मानवीय समानता के प्रचार-प्रसार के साथङ्गसाथ सद्भावना का वातावरण उत्पन्न कर निम्न एवं दलित समझे जाने वाले वर्ग को भी ऊँचा उठा कर समाज में समानता का स्तर प्रदान किया है। भाई मरदाना जी उस महान व्यक्तित्व के धनी हैं, जिन्हें जीवन-पर्यन्त गुरु जी की संगत व सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जहां श्री गुरु नानक देव जी का नाम श्रद्धापूर्वक एवं आदर सहित लिया जाता है वहीं उनके संगी एवं हमसफर भाई मरदाना जी का नाम भी सम्मानजनक शब्दों में स्मरण किया जाता है एवं किया जाता रहेगा। भाई मरदाना जी का प्रथम नाम 'दाना' था किन्तु गुरु जी की कृपा से उनका नाम 'मरदाना' हो गया। सिक्ख धर्म में 'भाई' की उपाधि अति विशिष्ट एवं सम्मानपूर्ण मानी जाती है। भाई मरदाना जी के श्रेष्ठ व्यक्तित्व, समर्पण-भावना एवं सेवारत होने के कारण ही श्री गुरु नानक देव जी ने उन्हें 'भाई' की उपाधि प्रदान की थी।

भाई मरदाना जी का जन्म ६ फरवरी, सन् १४५९ (संवत् १५१६) को रायभोय की तलवंडी (श्री ननकाणा साहिब, पाकिस्तान) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मीर बादरा (जो तथाकथित मिरासी जाति से सम्बन्धित थे) और माता का नाम बीबी लक्खो था। श्री गुरु नानक देव जी आयु में भाई मरदाना जी से दस वर्ष छोटे थे। भाई मरदाना जी को संगीत का ज्ञान पैतृक संगीत-साधना के कारण विरासत में ही प्राप्त हुआ था, इस कारण आप मधुर स्वर में गायन के साथङ्गसाथ रबाब बजाने में भी निपुण थे। गुरु जी ने प्रथम भेट में ही भाई मरदाना जी से कह दिया था कि ''शबद पाइके राग को गाए, तां तूं मरदाना कहलाए।''

श्री गुरु नानक देव जी स्वतन्त्र व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने वैसा ही जीवन जीया, जैसी उन्होंने बाणी उच्चारण कर धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं मानवीय आदर्शों को सर्वोच्चता प्रदान की है। श्री गुरु नानक देव जी ने पुराने प्रतीकों को नए अर्थ प्रदान करते हुए नए प्रतीकों, सिद्धान्तों एवं आदर्शों का समायोजन किया है। गुरबाणी में माया, संसार, ईश्वर, प्रकृति और मानव के परस्पर सम्बन्धों का इस प्रकार से समावेश है जो मानव समाज के लिए सार्थक तथा लाभदायक है। गुरु जी द्वारा मानव जाति को प्रदान की गई जीवन-शैली सत्य, संयम पर आधारित है, जिसमें मुख्य आदर्श ईश्वर के आदेश को सहज स्वीकार करना है और ''एकु पिता एकस

*५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राजस्थान), फोन : ९४१३६-५१६१७

के हम बारिक तू मेरा गुर हाई।।'' को अपनाते हुए निरर्थक रीतिङ्करिवाज और धार्मिक आडंबरोंङ्कपाखण्डों को त्यागना है।

एक ही गांव के निवासी होने के कारण गुरु जी और भाई मरदाना जी में बचपन से ही गहरी मित्रता थी। गुरु जी द्वारा दिए गए भरपूर प्यार, मानङ्कसम्मान और भाई मरदाना जी की पूर्ण समर्पणङ्कभावना के कारण यह मित्रता अंतिम सांस तक कायम रही है। सुखङ्कदुख का जीवन-पर्यन्त संगीङ्कसाथी होने के अतिरिक्त भाई मरदाना जी उच्च कोटि के संगीतज्ञ एवं गुरु जी के वचनों के पक्के अनुयायी थे।

श्री गुरु नानक देव जी ने भाई मरदाना जी के साथ चार लम्बी उदासियां अर्थात् धर्म प्रचार-यात्राएं की थीं, जो पच्चीस वर्ष तक निरन्तर जारी रही हैं और इस अवधि में गुरु जी द्वारा लगभग साठ हजार किलोमीटर की पदङ्कयात्राएं तय की गयी हैं। गुरु जी भारत के बाहर श्रीलंका, चीन, जापान, बंगलादेश, अफगानिस्तान, ईराक, ईरान इत्यादि देशों में धर्म प्रचारङ्कयात्राओं पर जब गए तब भाई मरदाना जी गुरु जी के संगीङ्कसाथी बन सदैव उनके साथ रहे। पुरातन जन्मङ्कसाखियों में भाई मरदाना जी को गुरु जी का अभिन्न सखा एवं अत्यन्त निकटवर्ती कहा गया है, क्योंकि आप सच्चे हृदय से गुरु जी की आज्ञा का पालन किया करते थे। जब भी गुरु जी के कण्ठ में से अमृत बाणी का उद्गम होता तो वे भाई मरदाना जी से कहते—— ''मरदानिआ! रबाब बजा! बाणी आई ए।'' भाई साहिब गुरु जी का आदेश पाकर तुरंत ही संगीतमयी रबाब बजाने लग जाते और गुरु जी के मुखारबिंद से उच्चरित अमृत बाणी का स्वयं भी अनुकरण कर मधुर स्वर में गायन करते। भाई मरदाना जी का सौभाग्य ही कहा जाएगा कि जितना साथ गुरु जी का वे हासिल कर पाए, उतना और कोई नहीं पा सका।

चौथी उदासी के समय जब श्री गुरु नानक देव जी अफगानिस्तान के खुरम नगर में विराजमान थे तो भाई मरदाना जी ने गुरु जी के चरणों में अपना शीश रख विनम्र निवेदन किया कि ''गुरु जी! इस नश्वर शरीर को त्यागने का अकाल पुरख से बुलावा आ गया है, इसलिए गुरु जी, मुझे विदा कीजिए!'' गुरु जी ने परम मित्र भाई मरदाना जी को गले से लगा लिया। १२ नवंबर, सन् १५३४ (१३ मार्गशीर्ष, १५९१ वि.) को भाई मरदाना जी ने ''गुरमुखि जनमु सवारि दरगह चलिआ'' के अनुरूप अपना शरीर त्याग दिया। भाई साहिब इतने भाग्यशाली सिक्ख रहे हैं कि उनका अंतिम संस्कार श्री गुरु नानक साहिब जी ने अपने हाथों से खुरम नदी के किनारे किया। भाई मरदाना जी के वंशज द्वारा गुरु-घर में कीर्तन करने की परंपरा का निर्वाह आगे भी निरंतर जारी रहा है। श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में भाई मरदाना जी के सुपुत्र भाई सजादा जी कीर्तन कर गुरु जी के आशीर्वाद के पात्र बने रहे। भाई मरदाना जी को गुरु-घर का प्रथम कीर्तनिया होने का गौरव प्राप्त है, जिन्हें सदैव आदर सहित स्मरण किया जाता रहेगा।

प्रेम और ममता की घनी छाँव : माता खीवी जी

*— डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

किसी समाज का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि उस समाज में, उस समाज के क्रिया-कलाप में स्त्रियों की क्या भूमिका है। गुरमति विचारधारा को प्रफुल्लित एवं स्थापित करने में अनेक कर्मठ एवं समर्पित स्त्रियों का योगदान रहा है। गुरु साहिबान, अद्वितीय सिक्खों एवं शहीद सिंघों के साथ-साथ गुरमति के पौधे को जिन अनगिनत स्त्रियों ने अपने प्रेम और समर्पण से सींचा, उनमें दूसरी पातशाही श्री गुरु अंगद देव जी की सुपत्नी माता खीवी जी का नाम विशेष महत्व वाला है। माता खीवी जी ने अपने गुरु-पति के साथ मिलकर मानवता का ऐसा बेमिसाल केंद्र निर्मित किया जो आज तक समस्त लोक को प्रेम और समर्पण का पाठ पढ़ाता आ रहा है।

जन्म एवं बालपल : श्री खडूर साहिब के पास एक गांव है—— संघर। इस गांव में एक बड़े साहूकार थे—— भाई देवी चंद जी। इन्हीं भाई देवी चंद जी के घर पुत्री-रूप में माता खीवी जी का जन्म हुआ। प्राचीन स्रोतों में माता खीवी जी की जन्म-तिथि का कहीं कोई जिक्र नहीं मिलता। माता जी के जन्म-दिवस के बारे में केवल अनुमान लगाए जाते हैं। प्रो. करतार सिंघ के अनुसार माता खीवी जी का जन्म सन् १५०६ ई. में हुआ।

एक अन्य इतिहासकार ज्ञानी ऊधम सिंघ ने माता खीवी जी की माता का नाम 'करम देई' लिखा है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि माता खीवी जी का जन्म भाई देवी चंद जी और माता करम देई जी के घर संघर गांव में सन् १५०६ ई. में हुआ।

माता खीवी जी का बचपन गांव संघर में ही बीता। माता जी बचपन से ही नेक और विनम्र स्वभाव वाले थे।

विवाह : माता खीवी जी का विवाह सन् १५१९ ई. में मत्ते दी सरां (सराय नागा) गांव के भाई फेरू जी के सुपुत्र भाई लहिणा जी के साथ हुआ। भाई फेरू जी ने कुछ समय गांव संघर तथा हरी के पत्तन में भी कारोबार किया और अंततः खडूर साहिब में जाकर अपना साहूकारा जमा लिया। व्यापार इस परिवार का खानदानी पेशा था। यह परिवार आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध था। भाई लहिणा जी घर के कारोबार में हाथ बँटाते और माता खीवी जी घर का काम-काज संभालतीं।

सन् १५२६ ई. में भाई फेरू जी अकाल प्रस्थान कर गए। कारोबार की सारी जिम्मेदारी

**१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

भाई लहिणा जी ने संभाल ली। माता खीवी जी की घर की देखभाल संबंधी जिम्मेदारी और भी बढ़ गई, जिसे माता जी बाखूबी निभाती रहीं।

श्री गुरु नानक देव जी की सेवा में भाई लहिणा जी : सन् १५३२ ई. में भाई लहिणा जी ने भाई जोध जी से श्री गुरु नानक देव जी की बाणी सुनी और इतने प्रभावित हुए कि श्री करतारपुर साहिब जाकर श्री गुरु नानक देव जी के दर्शन करने का मन बना लिया। भाई लहिणा जी श्री करतारपुर साहिब क्या पहुंचे कि श्री गुरु नानक देव जी के ही होकर रह गए। सन् १५३२ ई. से लेकर सन् १५३९ ई. तक, पूरे सात वर्ष तक भाई लहिणा जी गुरु-सेवा में लीन रहे।

गुरु-पति का सहयोग : भाई लहिणा जी की गुरु-सेवा अत्यंत प्रसिद्ध है। विनम्र आज्ञाकारी सेवक के रूप में अहं से कोसों दूर रहकर आपने ऐसी सेवा की, जिसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। श्री गुरु अंगद देव जी को गुरुआई प्राप्त होने में सेवा-भाव और समर्पण के साथ-साथ माता खीवी जी के सहयोग की बहुत बड़ी भूमिका रही।

श्री करतारपुर साहिब में भाई लहिणा जी गुरुआई प्राप्त कर श्री गुरु अंगद देव जी बन गए और श्री गुरु नानक देव जी की आज्ञा के अनुसार श्री खडूर साहिब वापस आकर धार्मिक प्रचार-प्रसार में जुट गए। माता खीवी जी गुरु-पति के हर कार्य में बढ़-चढ़ कर भाग लेतीं और जिम्मेदारियां संभालतीं।

गुरु के लंगर की व्यवस्थापक : लंगर-प्रथा श्री गुरु नानक देव जी ने श्री करतारपुर साहिब में ही आरंभ कर दी थी। द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी के काल में लंगर-व्यवस्था को और पुष्ट तथा सुदृढ़ किया गया।

ऐसे में लंगर की सेवा माता खीवी जी का मुख्य क्षेत्र हो गया। माता जी मुंह अंधेरे उठकर लंगर की व्यवस्था में लग जाते। सारा दिन अटूट लंगर बंटता। हर वर्ग-जाति के लोग बिना भेदभाव के एक ही पंगत में बैठकर लंगर छकते।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में दर्ज भाई सता जी-भाई बलवंड जी की 'रामकली की वार' में माता खीवी जी की इस सेवा की मुक्त कंठ से प्रशंसा की गई है।

भाई बलवंड जी के शब्दों में, माता खीवी जी अपने पति के समान ही नेक हैं। माता जी की जीवन-छाया घने पत्तों वाले वृक्ष के समान सुखदायी है। गुरु जी नाम की दौलत बांट रहे हैं और माता खीवी जी लंगर में घी वाली खीर वितरित कर रहे हैं :

बलवंड खीवी नेक जन
जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥
लंगरि दउलति वंडीऐ
रसु अंम्रितु खीरि घिआली ॥
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥
पए कबूलु खसंम नालि जां घाल मरदी घाली ॥
माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥

(पन्ना ९६७)

गुरु-पति के फैसलों का समर्थन : माता खीवी जी बड़ी स्पष्ट और सिद्धांतवादी थीं। माता जी ने गुरु-पति श्री गुरु अंगद देव जी के हर निर्णय का

सदा समर्थन किया और कहीं भी लौकिक-पारिवारिक मोह या स्वार्थ को आड़े नहीं आने दिया।

जब सन् १५५२ ई. में द्वितीय पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी ज्योति-जोत समाने लगे तो उन्होंने अपने परम सेवक गुरु अमरदास जी को सभी प्रकार से योग्य जान कर गुरुआई सौंपी, तो माता खीवी जी ने गुरु-पति के इस निर्णय का पूर्ण समर्थन किया।

इस निर्णय से नाराज़ होकर गुरु-पुत्र बाबा दातू और बाबा दासू तृतीय पातशाह श्री गुरु अमरदास जी से ईर्ष्या-भाव रखने लगे। इस स्थिति में भी माता खीवी जी ने श्री गुरु अमरदास जी का पक्ष लिया और दोनों पुत्रों को उनकी धृष्टता और उद्दंडता पर धिक्कारा।

तृतीय पातशाह के काल में माता खीवी जी : तृतीय पातशाह श्री गुरु अमरदास जी के गुरु-काल में भी माता खीवी जी श्री गोइंदवाल साहिब में निवास करते रहे। गुरु के लंगर की संपूर्ण जिम्मेदारी अभी भी माता जी के ही पास थी। माता जी निरंतर लंगर की सेवा में लगे रहे और बड़े समर्पित-भाव से अपने कर्त्तव्य का पालन करते रहे। माता खीवी जी ने लंबे समय तक गुरु के लंगर का संचालन किया।

जब माता खीवी जी अत्यंत वृद्ध हो गए तो श्री गोइंदवाल साहिब से श्री खडूर साहिब आ गए और अपने पुत्र बाबा दासू के साथ रहने लगे।

चतुर्थ पातशाह के काल में माता खीवी जी : सन् १५७४ ई. में तृतीय पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ज्योति-जोत समाए और श्री गुरु रामदास जी चतुर्थ पातशाह के रूप में गुरुआई पर सुशोभित हुए। इन दिनों में माता खीवी जी श्री खडूर साहिब में पुत्र बाबा दासू के साथ रह रहे थे।

जब श्री अमृतसर नगर की स्थापना हुई तो माता खीवी जी श्री अमृतसर साहिब आ गए और यहां कुछ समय तक रहे।

पंचम पातशाह के काल में माता खीवी जी : सन् १५८१ ई. में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी गुरुआई पर सुशोभित हुए। माता खीवी जी इस समय तक बहुत ही वृद्ध हो चुके थे। माता खीवी जी ने पुत्रों—— बाबा दातू और बाबा दासू की भूलें पंचम पातशाह से बख्शवाईं। पंचम पातशाह ने माता जी का भरपूर सम्मान किया।

माता खीवी जी का देहावसान : श्री खडूर साहिब में ही सन् १५८२ ई. (संवत् १६३९) में अत्यंत वृद्ध हो चुके माता खीवी जी का देहावसान हुआ। इस समय माता जी की आयु लगभग ७६ वर्ष थी। पंचम पातशाह स्वयं माता जी के अंतिम संस्कार में उपस्थित हुए :

संमत सोला सै उनताली जब भए।
माता खीवी जी सुरपुर नूं गए।
गुरु अरजन जी बासरकीओ आए खडूर मुकाणी।
दासू जी नूं पगि सी बंनणी। (बंसावलीनामा)

खुले हाथों से लंगर की दौलत बांटने वाले, धर्म की मूरत, सेवा-समर्पण के साकार रूप माता खीवी जी सिक्ख धर्म के मूल मानवतावादी रूप में रंग भरने वाले रहे हैं।

परमात्मा-भक्ति के रंगों का उत्सव : होला-महल्ला

*-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ**

मानव सभ्यता की विकास-यात्रा अद्‌भुत और रोचक है। मनुष्य अपने जीवन में नये-नये प्रयोग करता चला है, जिनका अनुसरण निरंतर और बहुसंख्या द्वारा किया गया, वे परंपरायें बन गईं। धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक अर्थात् जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परंपरायें ही व्यवस्था का आधार बनती गई हैं। समय के साथ उन परंपराओं का स्वरूप बदलता गया। उनके मूल उद्देश्य विस्मृत कर दिए गए और अतार्किकता व अंधविश्वासों का प्रभाव बढ़ गया। परंपराओं को ही धर्म और कर्म मान लिया गया। इनके विरोध में खड़े होने का साहस किसी में नहीं था, क्योंकि बहुसंख्या के आक्रोश का भय नज़र आता था। गुरु साहिबान ने ऐसी परंपराओं को न केवल चुनौती दी, बल्कि उनके विकल्प भी प्रस्तुत किये। इसके पीछे उनका एक ही उद्देश्य था—— धर्म की मर्यादा और जीवन में पवित्रता को अक्षुण्ण रखना। श्री गुरु नानक साहिब जी ने यह मिशन तत्कालीन शिक्षा-व्यवस्था की उपादेयता को इंगित कर आरंभ किया था। जनेऊ को दया, संतोष, जत और सत से जोड़ कर उन्होंने अन्धविश्वास की गहरी नींद में सोये हुए समाज की आंखें खोलने का कार्य किया। गुरु साहिबान ने वास्तव में किसी परिवर्तन, संशोधन के स्थान पर एक अभिनव दृष्टि से सम्पन्न नूतन जीवन-व्यवस्था का प्रतिपादन किया, जो आदि से अंत तक धर्म के मूल तत्वों से जोड़ने वाली थी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'खालसा' का सृजन कर ऐसी समाज-रचना को साकार किया जो अकल्पनीय थी। खालसा की सम्पूर्ण संरचना ही नहीं, कार्य-शैली भी पवित्र थी। गुरु साहिब ने जहां लोहे के बाटे में जल और बताशों का अमृत तैयार कर धर्म-संकल्प को नया प्रतीक प्रदान किया वहीं भारतवर्ष के प्रमुख त्यौहार होली को उस संकल्प से जोड़ कर सामाजिक व्यवस्था में भी नए रंग भर दिए। यह आवश्यक था कि धर्म ही नहीं, जीवन का प्रत्येक क्षेत्र उन सिद्धांतों के अनुकूल हो, जिन पर सिक्ख पंथ की नींव रखी गई थी। सिक्ख को समाज के अंदर गृहस्थ जीवन में रहते हुए मोक्ष की ओर बढ़ना था। समाज और परिवार की प्रणाली को तदनुरूप बनाए बिना यह संभव नहीं था। वह सामाजिक परंपराओं और अवसरों से कट कर नहीं रह सकता था। गुरु साहिबान ने अपनी आत्मिक श्रेष्ठता से उन परंपराओं को भी

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन : ९४१५९-६०५३३, ८४९७८-५२८९९*

जीवन-मुक्ति के लक्ष्य की प्राप्ति के माध्यम में बदल दिया। जैसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने वैसाखी के दिन खालसा का उद्‌भव कर वैसाखी के अर्थ ही नए कर दिए, गुरु साहिब ने ठीक इसी तरह होली को होला-महल्ला का रूप देकर उसमें परमात्मा के रंग भर दिए। यह रंग गुरबाणी में प्रकट हुए रंग थे।

गुरबाणी में 'रंग' शब्द का प्रयोग भिन्न सन्दर्भों में मिलता है। संसार की भ्रामक चमक, दमक, झूठ, आडंबर को भी 'रंग' कहा गया है। परमात्मा के प्रति प्रेम और विश्वास को भी रंग कहा गया है। परमात्मा की भक्ति में लीन हो जाने को भी 'रंग' माना गया है। गुरु साहिबान ने सच्चे रंग का चयन करने की प्रेरणा दी है।

कचा रंगु कसुंभ का
थोड़ड़िआ दिन चारि जीउ॥
विणु नावै भ्रमि भुलीआ
ठगि मुठी कूड़िआरि जीउ॥
सचे सेती रतिआ जनमु न दूजी वार जीउ॥
(पन्ना ७५१)

श्री गुरु नानक साहिब जी ने उपरोक्त वचन में कहा कि सांसारिक अथवा भौतिक जीवन-व्यवस्था के रंग कुसुंभ के उस फूल की तरह हैं जो देखने में गहरे लाल रंग का अति सुंदर दिखता है किन्तु जब उस पर धूप पड़ती है तो उसका रंग फीका पड़ जाता है। सांसारिक सुख-सुविधाओं और भोग-विलास के रंग भी ऐसे ही हैं, जो जीवन में सच्चाई का सामना होते ही रंगहीन हो जाते हैं। जिन रंगों में परमात्मा की भक्ति नहीं है वे सदा ही ठगने वाले, धोखा देने वाले हैं अर्थात् मनुष्य को अंततः निराश करने वाले हैं। ऐसे रंगों से सुख-आनन्द की आशा करना पूर्णतः व्यर्थ है। श्री गुरु नानक साहिब जी ने कहा कि सच्चा रंग परमात्मा के प्रेम का है जो एक बार चढ़ जाए तो कभी उतरता नहीं है। परमात्मा का रंग आनन्द देने वाला ही नहीं है, चौरासी लाख योनियों में आवागमन से मुक्त तक कर देने वाला है, किन्तु मनुष्य इसे समझता नहीं और कच्चे व शीघ्र उतर जाने वाले रंगों के मोह में ही पड़ा रहता है।

बहु रंग देखि भुलाइआ
भुलि भुलि आवै जाइ जीउ।। *(पन्ना ७५१)*

सांसारिक रंगों की चमक-दमक ऐसी है कि मनुष्य उसमें भ्रमित हो जाता है और आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं हो पाता। गुरु साहिब ने उन कच्चे रंगों के मोह से उबारने का उपकार किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काल तक आते-आते होली ने विकृत रूप ले लिया था। कीचड़, रंगों, मदिरा में आनन्द खोजा जाता था। जो धनवान थे वे होली को अपने धन-प्रदर्शन द्वारा मनपसंद रूप देने में सफल हो जाते थे। उनका होली का आनन्द उनके कपड़ों, पकवानों से प्रकट होता था। निर्धन के लिये होली का अर्थ पानी और कीचड़ डालने तथा कठिनाई से जुटाए व्यंजनों तक रह गया था। किन्तु सभी का आनन्द कुछ

समय तक ही रहता और जीवन पुन: चिंताओं से भर जाता था। होली का त्यौहार आनन्द के स्थान पर सामाजिक भेदभाव की रेखाओं को अधिक गहरा करता जा रहा था। इस वास्तविकता से अनभिज्ञ लोग भ्रम से उबर नहीं पाते थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस सत्य को पहचानते हुए होली को पानी में घुले रंगों के स्थान पर परमात्मा के रंगों के उत्सव का स्वरूप प्रदान किया। होली गुरु के सिक्ख के लिए गुरु की कृपा से होला-महल्ला बन कर सामने आई।

नदरि प्रभू ते छुटीऐ नदरी मेलि मिलाइ जीउ।।
(पन्ना ७५१)

वाहिगुरु परमात्मा जब कृपा करता है तो सांसारिक रंगों का मोह छूट जाता है। उनसे प्राप्त होने वाले झूठे आनन्द की वास्तविकता प्रकट हो जाती है। इससे विरत होकर मन परमात्मा-प्रेम के सच्चे रंग में लीन हो जाता है। होली को मनाने का ढंग ही बदल गया। होली का आरंभ एक दूसरे पर रंग, पानी और कीचड़ डालने से होता था। होला-महल्ला का आरंभ प्रात: शबद-कीर्तन के विशेष दीवान से होता था। राग-सभाएं आयोजित की जाती थीं और कवि दरबार भी सजाये जाते थे। सारी संगत इन आयोजनों का हिस्सा बनती और परमात्मा में मन जोड़ कर असीम आनन्द प्राप्त करती थी। इसके पश्चात दोपहर बाद विभिन्न खेल, शारीरिक अभ्यास होते थे, जिनमें अपने शारीरिक बल और वीरता का प्रदर्शन करने का सभी को बराबर का अवसर मिलता था। इन आयोजनों में कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। फूलों की वर्षा होती थी। लोग उत्साह से भर कर इस उत्सव को मनाते और शिष्ट ढंग से आनन्द में विभोर होते थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं सारा दिन संगत के बीच उपस्थित रह कर सिक्खों के आनन्द को कई गुणा बढ़ा देते थे। गुरु साहिब की उपस्थिति का रंग ही होला-महल्ला का मुख्य रंग बन जाता था। संगत उनके दर्शन करते हुए निहाल होती रहती थी। होली को आनन्द का त्यौहार माना जाता था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आनंद की गुणात्मकता को सुनिश्चित करने हेतु होली को गुरबाणी की भावना के केंद्र में लाकर पावन होला-महल्ला बना दिया और इसमें भाग लेने वालों को भाग्यशाली होने की अनुभूति प्रदान की, जिसे आनन्द और सुख की शीर्ष परिणिति माना जाता था। परमात्मा के रंग को गुरबाणी ने गहरा लाल रंग माना है :

लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा॥
मैला कदे न होवई नह लागै दागा॥१॥
प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ॥
सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ॥
(पन्ना ८०८)

परमात्मा-प्रेम का लाल रंग कभी भी उतरता नहीं है। उसमें सदैव चमक बनी रहती है। उस रंग को कभी भी मलिन अथवा विकृत नहीं किया जा सकता। ऐसे रंग में रंगे जाना अति भाग्यशाली होने का प्रतीक है। परमात्मा

के रंग में सुख की प्राप्ति सहज ही हो जाती है। परमात्मा-प्रेम में रंग कर मनुष्य परमात्मा की शरण पा लेता है। परमात्मा के लिए प्रेम पैदा हो जाए तो उससे दूर रहना संभव नहीं होता। गुरु साहिबान ने सिक्खों के मन में परमात्मा-प्रेम की जो भावना स्थिर की थी वह सदैव जीवित रहने वाली और गहरी होती जाने वाली थी। होली में भी वह परमात्मा को कैसे विस्मृत कर सकता था! सिक्ख की होली तो वास्तव में परमात्मा की भक्ति ही है। इसे श्री गुरु अरजन साहिब ने पहले ही स्पष्ट कर दिया था :

गुरु सेवउ करि नमसकार ॥
आजु हमारै मंगलचार ॥
आजु हमारै महा अनंद ॥
चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१ ॥
आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥
गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥ (पन्ना ११८०)

होला-महल्ला एक मंगल उत्सव की तरह है। मंगल उत्सव का अर्थ है कि स्वयं अपने मंगल की कामना की जाये और साथ ही समस्त जीवों के मंगल की भी। यह सह-अस्तित्व का नहीं उससे कहीं अधिक व्यापक सह-आनन्द का भाव है। इसके लिये गुरसिक्ख सर्वप्रथम परमात्मा के चरणों में नमस्कार, वन्दन करता है। इससे वाहिगुरु परमात्मा की सेवा-भक्ति का आरंभ होता है। परमात्मा के आगे शीश झुका कर गुरसिक्ख अपनी श्रद्धा, भावना, समर्पण और विश्वास को प्रकट करता है। परमात्मा की शरण लेने के बाद वह सभी चिंताओं से मुक्त हो आनन्द की अवस्था में आ जाता है। होला-महल्ला का आरंभ गुरबाणी से करना आनन्द की अवस्था प्राप्त करना है। जब मन चिंताओं से मुक्त नहीं होगा, अपने हित के प्रति आश्वस्त नहीं होगा, किसी आनन्द की प्रतीति नहीं हो सकेगी। कोई भी पर्व, त्यौहार हो, वह जीवन में परिवर्तनकारी सिद्ध नहीं होगा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने परमात्मा से जोड़ कर आनन्द के अनुकूल मन:स्थिति का निर्माण किया। सिक्खों की उत्सवप्रियता की बड़ी रुचि के साथ चर्चा होती है। इसका मूल कारण सिक्ख के जीवन का परमात्मा-विश्वास के मजबूत आधार पर टिका होना है। परमात्मा और गुरबाणी से जुड़ा हुआ सिक्ख जानता है कि आनन्द क्या है और इसका स्रोत क्या है। इस बोध के कारण सिक्ख अपने आनन्द के लिए पारंपरिक साधनों पर निर्भर नहीं करता है। होली खेलने के लिये वह स्वयं को परमात्मा के रंग में सराबोर करता है और होली को होला-महल्ला में बदल देता है। होला-महल्ला मनाने का ढंग भी अनूठा है :

आजु हमारै बने फाग ॥
प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥
होली कीनी संत सेव ॥
रंगु लागा अति लाल देव ॥ (पन्ना ११८०)

गुरसिक्ख होला-महल्ला परमात्मा के भक्तों के साथ मनाता है अर्थात् वह साधसंगत में इसका आनन्द प्राप्त करता है। परमात्मा के

गुणों का गायन करना, उसका ध्यान करना और उसके हुक्म में रह कर जीवन व्यतीत करना ही गुरसिक्ख का होला-महल्ला है। इस तरह की सेवाभाव वाली भक्ति से प्रेम का जो रंग चढ़ता है वह चटख और पक्का लाल रंग होता है। इस चटख रंग का उत्साह दूसरे दिन अधिक निखरता है। दूसरे दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी सिक्खों के दो दल बना दिया करते थे। एक खुले और बड़े मैदान में दोनों दलों के मध्य छद्म युद्ध कराया जाता था। सिक्ख अपने युद्ध-कौशल का प्रदर्शन करते थे। युद्ध के समय पूरी सावधानी बरती जाती थी कि किसी को भी शारीरिक क्षति न पहुंचे। सिक्खों का युद्ध भी उनकी परमात्मा-भक्ति का ही एक रंग था। युद्ध का उद्देश्य सिक्ख के लिए कभी दूसरे का उत्पीड़न अथवा व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा नहीं रहा है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शिक्षा थी कि जब धर्म-रक्षा का कोई विकल्प न बचे तभी शस्त्र उठाना उचित है। गुरु साहिब ने सिक्ख को शस्त्रधारी खालसा बनाया था। शस्त्र उसके लिए पूज्यनीय थे।

असि क्रिपान खंडो खड़ग तुपक तबर अरु तीर॥
सैफ सरोही सैहथी यहै हमारै पीर॥

(ससत्र नाम माला)

सिक्ख शस्त्रों को भी अपनी भक्ति-भावना का प्रतीक समझ कर धारण करते थे। अपनी धर्म-भावना को बनाए रखने के लिए वे युद्ध से भी पीछे नहीं हटते थे। होला-महल्ला के अवसर पर छद्म युद्धों का आयोजन और अपनी वीरता का प्रदर्शन उस प्रेम-रंग का विस्तार था। इसे तो श्री गुरु नानक साहिब जी ने पूर्व में ही स्पष्ट कर दिया था। उन्होंने कहा था कि उनका मार्ग परमात्मा के प्रेम का है। इस मार्ग पर आना है तो सम्पूर्ण समर्पण के संकल्प के साथ ही आना चाहिए। यदि इसके लिए अपना शीश भी भेंट कर देना पड़े तो रंच-मात्र भी संकोच नहीं करना चाहिए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सन् १६९९ की वैसाखी के दिन तेग लहराते हुए जब पांच सिक्खों से शीश मांगे थे तब पांच प्यारे अपना शीश अर्पित करने हेतु जब आगे आए तो उनके मन में गुरु के लिए प्रेम था। कोई प्रश्न उनके मन में नहीं चल रहा था अन्यथा वे हजारों की संगत के बीच से उठ कर स्वयं को स्वेच्छा से प्रस्तुत न करते।

मन अरपउ धनु राखउ आगै
मनु की मति मोहि सगल तिआगी॥

(पन्ना २०४)

त्यौहार, जो सदियों से चलते आ रहे हैं, प्रायः रूढ़िवादी परंपराओं में बंध जाते हैं। मनुष्य उनकी तार्किकता में न जाकर उनका पालन करते जाने में ही अपना हित समझता है। यह सभी कुछ यांत्रिक ढंग से सम्पन्न तो हो जाता है जिससे मनुष्य संतुष्टि का अनुभव करता है, किन्तु उसकी भावनायें जाग्रत नहीं हो पाती हैं। सिक्ख धर्म भावना का ही धर्म है। सिक्ख के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को गुरबाणी ने भावनात्मक स्तर पर प्रभावित किया है और

राह दिखाई है। यही कारण है कि सिक्ख का जीवन दोहरे मापदन्डों से बच कर आगे बढ़ता है। होला-महल्ला भी इसकी पुष्टि करता है। इसके आयोजन का एक भी सूत्र ऐसा नहीं है जिसका मन्तव्य स्पष्ट न हो और कोई विरोधाभास हो।

बसंतु हमारै राम रंगु॥
संत जना सिउ सदा संगु॥ (पन्ना ११८३)

जिस समय को संसार आनन्द का माध्यम मानता है, सिक्ख के लिये वह समय आनन्ददायी तब बनता है जब वह उसमें परमात्मा के दर्शन करता है और भक्ति-भावना में रंग कर उससे जुड़ता है। ऐसा करने से उसके सारे दिन ही होली का आनन्द देने वाले बन जाते हैं। गुरबाणी के अनुसार वो हर दिन सुहावना है जब मन में परमात्मा का स्मरण बना हुआ है। जब परमात्मा के प्रेम में रंग कर सिक्ख होला-महल्ला मनाते हैं तो उसकी शोभा विलक्षण होती है। श्री अनंदपुर साहिब का होला-महल्ला विश्व में चर्चित है।

सूहब सूहब सूहवी।।
अपने प्रीतम कै रंगि रती।। (पन्ना ७३९)

गुरु साहिबान ने उत्सवों, पर्वों को न केवल सांस्कृतिक, सामाजिक शिष्टता प्रदान की, बल्कि उन्हें आध्यात्मिक सौन्दर्य से भी समृद्ध किया था। होला-महल्ला इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। जब किसी परंपरा अथवा पर्व का आध्यात्मिक पक्ष स्पष्ट होता है, समाज में उसकी स्वीकार्यता बढ़ जाती है। प्रेम और आध्यात्म की चर्चा संसार में सदा से होती रही है। त्यौहारों को भी प्रेम से जोड़ा जाता था, किन्तु गुरु साहिबान ने आध्यात्म से प्रेम को उजागर किया था, जिसकी आभा अलग ही थी। श्री गुरु अमरदास जी ने कहा कि संसार जिसे प्रेम समझ रहा है वह रात के सपने और बिना धागे की माला की तरह है :

सूहा रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु॥
सचा रंगु मजीठ का गुरमुखि ब्रहम बीचारु॥
(पन्ना ७८६)

होला-महल्ला ब्रह्म विचार के कारण ही सिक्ख पंथ का एक विशिष्ट पर्व बन गया है। होली को भक्त प्रहलाद की कथा से जोड़ कर देखा जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में भक्त प्रहलाद का उल्लेख अनेक स्थानों पर मिलता है। होला-महल्ला का आनन्द और प्रेरणा परमात्मा के गहरे प्रेम-रंग में ही है। ☸

भाई सुबेग सिंघ—भाई शाहबाज सिंघ

*—डॉ. मनजीत कौर**

शहीदी परम्परा की एक और इबारत लिखने वाले महान शहीद, पिता-पुत्र भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज सिंघ थे, जिन्हें चरखड़ी पर चढ़ा कर शहीद कर दिया गया। उन्होंने जालिमों की धौंस स्वीकार नहीं की, अकाल-अकाल का उद्घोष करते हुए, चढ़दी कला में रहकर, असह कष्ट सहन करते हुए शहादत प्राप्त कर गए।

भाई सुबेग सिंघ लाहौर के निकट जांबर गांव के रहने वाले थे। वे उच्च कोटि के विद्वान, फारसी भाषा में पारंगत, चिन्तनशील, सच्चे गुरसिक्ख, मधुरभाषी, नीतिवान, व्यापारी, ठेकेदार होने के साथ-साथ बहुत ही मिलनसार स्वभाव के थे। अपने इन्हीं गुणों के कारण उनकी बहुत ही प्रतिष्ठा और लोकप्रियता थी। उनके व्यक्तित्व की अनूठी छाप केवल अपने क्षेत्र तक ही सीमित नहीं थी, अपितु लाहौर का अत्याचारी कट्टर गवर्नर जकरिया खान भी इनके व्यक्तित्व से प्रभावित था। उसने सरदार सुबेग सिंघ को सरकारी पद पर नियुक्त किया और कुछ समय के लिए लाहौर का कोतवाल भी नियुक्त किया। किसी सिक्ख की सरकारी पद पर नियुक्ति और वह भी ऐसे समय में जब सिक्खों पर जुल्म पर जुल्म किए जा रहे थे और उन्हें समूल नष्ट करने की ठान ली गई हो, यह सब सिक्खों के पराक्रम का ही परिणाम थी।

एक तरफ जब्र की इन्तहा और दूसरी तरफ धैर्य, आस्था, भरोसा, निष्ठा, ईमानदारी और धर्म की रक्षा हेतु कुर्बान हो जाने का जज्बा, जालिमों के समक्ष हरगिज घुटने न टेकने का प्रण और स्वाभिमान को ठेस न पहुंचाने के संदर्भ में अगर विचार करें तो विद्वानों के चिन्तनानुसार १७४८ ई. सिक्ख इतिहास का एक महान वर्ष माना गया है। इस दौरान सिंघों के बारह जत्थे बनाकर उन्हें बारह मिसलों का नाम दिया गया। यह वो दौर था जब एक ओर सिंघ संगठित होकर जुल्म करने वालों को हमेशा के लिए समाप्त करने की युक्ति बना रहे थे, दूसरी ओर जालिम क्रूरता की सारी हदें पार कर नए-नए जुल्मो-सितम ढाहने के हथकण्डे अपना कर जबरदस्ती इसलाम धर्म कबूल करवाना चाहते थे। इसी दौर में सिक्ख धर्म की दो महान शख्सियतों—

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

पिता रूप में भाई सुबेग सिंघ और पुत्र रूप में भाई शाहबाज सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद कर दिया गया।

लाहौर का गवर्नर जकरिया खान बेशक भाई सुबेग सिंघ की ईमानदारी का कायल था, उनका सम्मान भी करता था, लेकिन नेक नियति से नहीं, स्वार्थ से।

स्वार्थी और कट्टर व्यक्ति के हृदय में रहम, दया, करुणा का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं होता। वह जुल्म करने से बाज नहीं आता और जुल्म करने के मंसूबे बनाता हुआ किसी विशेष अवसर की तलाश में रहता है। इसका पुख्ता प्रमाण इतिहास की इस घटना से स्पष्ट लक्षित होता है कि जब जकरिया खान ने वाँ गांव के रहने वाले भाई तारा सिंघ को शहीद करवा दिया था। इस घटना ने समूची सिक्ख कौम को आक्रोश से भर दिया था। परिणामस्वरूप दीवान दरबारा सिंघ तथा सरदार कपूर सिंघ फैजलपुरिया के नेतृत्व में लाहौर सरकार से बदला लेने हेतु आर्थिक नाकाबंदी कर दी गई। इस प्रकार के दृढ़तापूर्ण निर्णय ने लाहौर सरकार को हिला कर रख दिया। जकरिया खान हर प्रकार की सैन्य कठोरता, बर्बरता सिक्खों पर करके हार गया। अन्त में निर्दयी शासक ने एक और चाल चलते हुए सिक्खों से समझौता करने का मन स्वार्थ-सिद्धि हेतु बनाया। इस महत्वपूर्ण कार्य हेतु उसे जरूरत महसूस हुई भाई सुबेग सिंघ की। उन्हें बुलवा कर जकरिया खान ने कहा कि ''आपने कई बार सरकार को सिक्खों के साथ संबंध सुधारने हेतु परामर्श दिया है। अब मैं भी यही चाहता हूं और इसके लिए आप मध्यस्थ बनकर सिक्खों के साथ मेरी सुलह करवा दें!'' इससे स्पष्ट होता है कि जहां भजन-बंदगी में लीन रहने वाले, उच्च आचरण के धनी भाई सुबेग सिंघ के प्रति सिक्खों के मन में पूर्ण आदर-सत्कार था, वहीं इनकी ईमानदारी से भी प्रभावित थी मुगल सरकार। इसका पुख्ता प्रमाण 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में मिलता है :

तुरक उसै खालसे वल तोरैं।
खालसा भी तिस को भल लोरैं।
कोई तुरकन परै जरूरी काम।
तौ उस भेजैं कर कर सलाम।।३।।

(पृष्ठ ३३९)

जब जकरिया खान ने भाई सुबेग सिंघ के सामने सिक्खों के साथ समझौते की बात रखी तो भाई सुबेग सिंघ का पहला प्रश्न था—— ''समझौते की शर्तें क्या होंगी?'' जकरिया खान का जवाब था—— ''सिक्ख हुकूमती गतिविधियों का विरोध करना छोड़ दें!'' भाई सुबेग सिंघ का अगला प्रश्न था—— ''आप बदले में क्या देंगे?'' जकरिया खान का जवाब था—— ''उनके

एक जन को नवाब का पद दिया जाएगा।'' भाई सुबेग सिंघ ने निर्भीकता से कहा—— ''सिक्ख नहीं मानेंगे।'' जकरिया खान झुंझलाहट भरे लहजे में बोला—— ''आखिर सिक्ख चाहते क्या हैं ?'' भाई सुबेग सिंघ का कथन था—— ''पहले उन्हें उनके गुरुधामों की खुली यात्रा तथा सेवाङ्गसम्भाल करने की अनुमति दी जाए।'' जकरिया खान द्वारा यह सुझाव भी मान लिया गया। बड़ी सूझबूझ से भाई सुबेग सिंघ ने सिक्खों के हित में एक और शर्त रखी—— ''उन्हें जागीर भी दी जाए, ताकि गुरुद्वारा साहिबान की संभाल के लिए होने वाले खर्च की व्यवस्था ठीक से हो सके।

ये सारी शर्तें लिखित रूप में मनवा कर भाई सुबेग सिंघ श्री अमृतसर लौट आए। यहां आकर भाई सुबेग सिंघ ने दीवान दरबारा सिंघ को संदेश भिजवाया और मिलकर सारी स्थिति को स्पष्ट कर दिया। नेक नियति और ईमानदारी से इस तथ्य को स्पष्ट करने के बावजूद भी दीवान दरबारा सिंघ ने कहा कि ''वे इस सन्दर्भ में अकेले कुछ नहीं कह सकते। 'सरबत्त खालसा' ही इसका निर्णय लेगा।'' इस पर भाई सुबेग सिंघ ने कहा, ''ठीक है, मुझे 'सरबत्त खालसा' की सभा में बुलाया जाए। मैं वहां सारी बात कह दूंगा।'' विनम्रतापूर्वक कहे इन शब्दों के उपरान्त 'सरबत्त खालसा' की सभा में दीवान दरबारा सिंघ ने वह पेशकश बयान की जो सरकार द्वारा पेश की गई थी। उस पर विचार-विमर्श किया गया। कुछ सिंघों की राय थी कि इस पेशकश को ठुकरा दिया जाए, लेकिन दीवान दरबारा सिंघ ने बताया कि भाई सुबेग सिंघ खुद इस सभा में उपस्थित होकर सारी स्थिति स्पष्ट करना चाहते हैं। इस पर 'सरबत्त खालसा' का फैसला था कि ''भाई सुबेग सिंघ उस सरकार के साथ हैं, जो सिक्खों के खिलाफ है। इस कारण वे दोषी हैं। यहां आने से पूर्व उन्हें धार्मिक सजा (तनखाह) पूरी करनी होगी, तभी वे सभा में उपस्थित हो सकते हैं, अन्यथा नहीं।'' भाई सुबेग सिंघ ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक 'सरबत्त खालसा' की ओर से लगाई गई तनखाह को कबूल किया और फिर सभा में आकर विद्वतापूर्वक सरकार के प्रस्ताव को पारित करवा लिया।

सरदार कपूर सिंघ के नाम पर नवाब पद लेने पर सहमति बनी। गुरु-घर के श्रद्धालु, अति विनम्र-भाव वाले सरदार कपूर सिंघ ने नवाबी लेने से पहले यह शर्त रखी कि मुझे मेरी पहली सेवा (घोड़ों की लीद उठाना) से वंचित न किया जाए। धन्य हैं ऐसे सिक्ख!

इस समझौते पर जकरिया खान बहुत प्रसन्न हुआ। भाई सुबेग सिंघ के विद्वतापूर्वक किए गए इस कार्य की सफलता पर जकरिया खान ने उन्हें लाहौर का कोतवाल नियुक्त कर

दिया। परिणामस्वरूप भाई सुबेग सिंघ के प्रति लोगों का प्यार, अदब-सत्कार कई गुना बढ़ गया। इस पद की नियुक्ति के उपरान्त भाई सुबेग सिंघ ने अनेक कुरीतियां बंद करवाईं। शहीद सिंघों के सिरों को दीवारों पर से उतरवा कर तथा कुओं से निकलवा कर उनका अन्तिम संस्कार करवाया। और भी जनताङ्कहित में अनेक कार्य किए। परिणामस्वरूप उनके प्रशंसकों की गिनती निरन्तर बढ़ने लगी।

ईर्ष्यालु, निर्दयी और कट्टर स्वभाव के मालिक जकरिया खान ने पुन: सिंघों के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया। सिंघों ने भी प्रत्युत्तर में सरकार का घेरा तंग करना शुरू कर दिया। राजनीति की कुटिल चाल चलते हुए भाई सुबेग सिंघ पर जकरिया खान ने यह आरोप लगाया कि आपकी वजह से सरकारी भेद सिक्खों तक पहुंचते हैं। उन्हें कोतवाल पद से हटा दिया गया। भाई सुबेग सिंघ सहज स्वभाव अपने पूर्ववत् कारोबार में लग गए।

किस्सा यहीं खत्म नहीं होता, अपितु यहां से शुरू होता है। भाई सुबेग सिंघ का एक पुत्र था—— भाई शाहबाज सिंघ। भाई शाहबाज सिंघ बहुत ही होनहार, प्रतिभावान थे। वे एक काजी के पास फारसी पढ़ते थे। काजी १८ वर्षीय भाई शाहबाज सिंघ के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित था। उसने इन्हें मुसलमान बना कर अपनी बेटी से निकाह करवाने का मन बनाया। काजी हर मुमकिन कोशिश करता रहा कि किसी प्रकार इन्हें इसलाम धर्म कबूल करवा ले, लेकिन वह अपने नापाक इरादे में सफल न हो सका। वह उन्हें तरहङ्कतरह से डरानेङ्कधमकाने लगा। इसका भी कोई प्रभाव भाई शाहबाज सिंघ पर नहीं हुआ। एक दिन उनके एक सहपाठी ने सिक्ख धर्म पर आक्षेप किए। भाई शाहबाज सिंघ सिक्ख धर्म की पूरी जानकारी रखते थे। उन्होंने सिक्ख धर्म पर लगाए आक्षेपों का तर्कपूर्ण ढंग के साथ खण्डन किया। बात काजी तक पहुंची, जो पहले से ही भाई शाहबाज सिंघ के प्रति द्वेष से भरा हुआ था। उसने बेवजह भाई शाहबाज सिंघ को ही दोषी ठहराया और शासक के यहां मनघड़त कहानी गढ़ कर कहा कि ''भाई शाहबाज सिंघ ने इसलाम धर्म का निरादर किया है। यह हमारे धर्म का विरोध करता है और लोगों को भी हमारे धर्म के खिलाफ भड़काता है।'' भाई शाहबाज सिंघ को गिरफ्तार कर लिया गया। इस दौरान जकरिया खान की मृत्यु हो गई। उसकी जगह उसका पुत्र याहिया खान पंजाब का गवर्नर बना। यह कट्टरता और निदर्यता में अपने पिता से भी दो कदम आगे था। जब इसके समक्ष भाई शाहबाज सिंघ के मुकद्दमे

की सुनवाई शुरू हुई, मौलवी के बयान और स्थानीय फर्जी झूठी रिपोर्टों के आधार पर भाई शाहबाज सिंघ को दोषी करार दिया गया। साथ ही भाई सुबेग सिंघ के प्रति हुकूमती अप्रसन्नता के चलते पिताङ्कपुत्र दोनों की गिरफ्तारी का आदेश दे दिया गया। निर्दोष पिता-पुत्र को लाहौर के बड़े काजी के सुपुर्द कर दिया गया। वहां से आदेश जारी हुआ कि मृत्यु अथवा इसलाम में से जो चाहो, चुन लो। फौलादी इरादे वाले सच्चे धर्म-प्रेमियों ने मौत का चुनाव किया। निर्भयता से गगनभेदी जैकारे गजाए गए। सिंघों की निर्भयता से तिलमिलाते हुए जालिम याहिया खान ने खौफनाक मृत्यु का फतवा जारी किया कि ''अगर इसलाम कबूल नहीं करोगे तो चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद कर दिए जाओगे!'' पिता-पुत्र ने बड़ी दिलेरी से कहा, ''अगर मृत्यु के भय से धर्म-परिवर्तन कर लेंगे तो फिर क्या मौत नहीं आएगी?'' 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में इस हकीकत को इस प्रकार बयान किया गया है :

मरनों डर हम दीन मों करो।
होइ दीन मैं फिर नहिं मरों।।१०।।

(पृष्ठ ३४०)

दोनो महान पिताङ्कपुत्र चरखड़ी पर चढ़ा दिए गए। जालिमों द्वारा निदर्यता का एक और अध्याय लिखा गया। दूसरी ओर सिंघ अकालङ्कअकाल, वाहिगुरुङ्कवाहिगुरु का सिमरन करते हुए, असह कष्ट झेलते हुए, अडोल अवस्था में रहकर, हर लालच और भय को ठुकराते हुए बड़े फख्र से बोले :

सिक्खन काज सु गुरू हमारे।
सीस दीओ निज सन परवारे।।२७।।...
हम कारन गुर कुलहि गवाई।
हम कुल राखैं कौण बडाई?

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३४२)

अपनी जीत का शंखनाद करते हुए, खुशी का तराना गुनगुनाते हुए शहादतों के अध्याय में एक और अनूठा अंक जोड़कर मानो विजय का उद्घोष कर रहे हों :

धंन घड़ी, धंन चरखड़ी,
धंन निआओ तुमारा।
धरम हेत हम चड़हि चरखड़ी,
धंन वजूद हमारा।

शत्-शत् नमन् है महान शहीदों को! पिता-पुत्र की शहादत को सिजदा करते हुए स. रतन सिंघ (भंगू) की काव्य-पंक्तियां यहां उल्लेखनीय हैं :

सुबेग सिंघ जंबर भयो,
सिखी मध मज़बूत।
वहि भी सतिगुर सिख हुतो,
जिस को थो वह पूत॥१॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ ३३९)

लासानी योद्धा अकाली फूला सिंघ

*- स. सुखचैन सिंघ लायलपुरी**

अकाली फूला सिंघ सिक्ख शासन-काल के समय महान जरनैल हुए है जिनका नाम सुनते ही दुश्मनङ्कदल को कँपकँपी छिड़ जाती थी। देश और धर्म के लिए जान कुर्बान करने वाले बहादुरों में अकाली फूला सिंघ का नाम अति लोकप्रिय है।

इस बहादुर जरनैल का जन्म सन् १७६१ ई. (१८१८ विक्रमी) में बाँगड़ क्षेत्र में एक छोटे-से गाँव सीहां में हुआ। आप जी के पूर्वज दरिया घग्गर के किनारे रहते थे, जहाँ प्रत्येक वर्ष इनकी फ़सल और इनका घरघाट दरिया में आई बाढ़ के कारण बर्बाद हो जाता था। इस प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए इन्होंने बाँगड़ क्षेत्र में अपना ठिकाना कर लिया। बड़े घल्लूघारे के समय अकाली फूला सिंघ के पिता ने सिक्ख फौज में शामिल होकर भाग लिया और गंभीरावस्था में घायल होकर, अपने गाँव पहुंच कर परलोक गमन कर गए। उस समय अकाली जी की आयु लगभग सवा वर्ष थी। सरदार नैणा सिंघ, जो अकाली फूला सिंघ के पिता के परम मित्र थे, ने अकाली फूला सिंघ की परवरिश की। इनकी आयु लगभग सात वर्ष थी, जब माता जी भी अकाल प्रस्थान कर गए। स. नैणा सिंघ अकाली फूला सिंघ को अपने पास श्री अनंदपुर साहिब ले गए, जहाँ इनका डेरा था।

दस-बारह वर्ष की आयु में ही अकाली फूला सिंघ घोड़े की सवारी और निशानेबाजी में माहिर हो गए। उन्हें श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी कंठस्थ था। तेग़ चलाने में आप बड़े-बड़े आदमियों का मुकाबला करने लगे। स. नैणा सिंघ निहंग सिंघों की भांति रहते थे, इसलिए अकाली फूला सिंघ भी निहंग सज गए।

सरदार नैणा सिंघ जब बूढ़े हो गए तो उन्होंने श्री अमृतसर में निवास कर लिया। उनके साथ ही अकाली फूला सिंघ भी यहाँ पर आ गए। सरदार नैणा सिंघ का देहांत हो गया और अकाली फूला सिंघ, जहाँ आजकल बुर्ज अकाली फूला सिंघ है, यहां पर रहने लगे। उस समय सिक्ख मिसलों के सरदारों ने अकाली जी को श्री अकाल तख़्त साहिब की सेवा सौंप दी और उन्हें शस्त्रधारी सिंघों के गुज़ारे के लिए जागीर प्रदान की।

महाराजा रणजीत सिंघ ने जब श्री अमृतसर को फ़तिह करने के लिए चढ़ाई की तो सिक्ख फौज आपस में लड़ने लगी।

**कंबोज नगर, फिरोजपुर शहर, फोन : ९४१७१-२६६५२*

अकाली जी ने मध्यस्थता कर जंग बंद करवा दी। इस प्रकार महाराजा रणजीत सिंघ का अकाली जी के साथ अति स्नेह हो गया। महाराजा ने अकाली जी के अधीन अकाल नामक रेजिमेंट का गठन किया और उन्हें उसका प्रमुख नियुक्त कर दिया। यह सारी रेजिमेंट घुड़सवार सरदारों की थी, जो अपने आप को अकाली कहलवाते थे।

अकाली फूला सिंघ ने महाराजा रणजीत सिंघ की कठिन और ख़तरनाक मुहिमों में हमेशा सहायता की। मुलतान की मुहिम के समय महाराजा रणजीत सिंघ को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। किला फ़तिह नहीं हो रहा था। छः महीने घेरा डाले रहने के बावजूद भी किला फतिह न हो सका।

जब प्रत्येक प्रयास असफल रहा तो महाराजा रणजीत सिंघ खुद श्री अमृतसर पहुँचे और उन्होंने अकाली फूला सिंघ से विनती की कि वे मुलतान की मुहिम में उनका साथ दें। अकाली जी ने अरदासा किया और महाराजा रणजीत सिंघ का साथ देते हुए अपने अकाली शूरवीर घुड़सवारों को लेकर मुलतान पर चढ़ाई कर दी। तोपों द्वारा किले की दीवार में दरार डाली गई और उस दरार वाली जगह में से अकाली जी के जांबाज घुड़सवार योद्धाओं ने बिजली की भांति तेज गति से किले में प्रवेश किया। अंदर जाकर उन्होंने ऐसी तेग चलाई कि मानों प्रलय आ गई हो। लाशों के ढेर लग गए। नवाब और उसके पाँच पुत्र मारे गए। किला फतिह हो गया।

अकाली फूला सिंघ कश्मीर, पेशावर और नुशहरे के युद्ध में शामिल हुए। उन्होंने सिक्ख राज के निर्माण में महान योगदान दिया। वे सिक्ख राज के निर्माता और बड़े स्तंभ माने जाते थे। वे निर्भय और साहसी जरनैल थे। एक बार जब उन्हें पता चला कि महाराजा रणजीत सिंघ ने सिक्ख मर्यादा के विपरीत कोई कार्य किया है, तो उन्होंने श्री अकाल तख़्त साहिब के सामने महाराजा को बाँध कर कोड़े मारने की सजा सुनाई। महाराजा ने इस हुक्मनामे के आगे सिर झुकाया, भले ही उपस्थित संगत द्वारा विनम्रतापूर्वक विनती करने पर महाराजा को क्षमा कर दिया गया। सच्ची बात मुँह पर कह देना अकाली फूला सिंघ अपना कर्त्तव्य समझते थे। वे कई बार महाराजा रणजीत सिंघ के साथ झगड़ पड़ते थे, परन्तु महाराजा रणजीत सिंघ खुद उन्हें मना लेते थे। उन्होंने डोगरों की राज-दरबार में बढ़ रही शक्ति से कई बार महाराजा को सचेत किया था, ताकि सिक्ख राज को उनकी गंदी और भद्दी चालों से बचाया जा सके। एक बार उन्होंने इस सम्बन्ध में महाराजा के पास लाहौर जाकर मुलाकात करनी चाही, परन्तु डोगरे दरबारियों ने उनके साथ महाराजा की मुलाकात कराने में जानबूझ कर लापरवाही दिखाई। अकाली जी ऊब

कर अपनी सेना सहित महाराजा के सामने किले में जा घुसे। बातचीत के दौरान महाराजा रणजीत सिंघ अकाली जी की पूर्णत: संतुष्टि न करा सके और डोगरों का पक्ष लेते रहे। आक्रोशस्वरूप अकाली जी श्री अमृतसर छोड़ कर श्री अनंदपुर साहिब आ गए। अकाली जी के यहाँ पहुँचने से अंग्रेज़ों को गंभीर चिंता होने लगी, क्योंकि वे पराक्रमी जरनैल की बहादुरी के बारे में पहले से बहुत कुछ सुन चुके थे।

महाराजा जींद किसी बात को लेकर अंग्रेज़ों के साथ नाराज़ थे और वे भी अकाली फूला सिंघ की शरण में आ गए। अंग्रेज़ों ने महाराजा रणजीत सिंघ और राजा नाभा के माध्यम से अकाली जी पर दबाव डाला कि वे जींद के राजा को निकाल दें, मगर निश्चय के पक्के अकाली जी ने शरण में आए को ठुकराना उचित न समझा। अंतत: डोगरे मंत्रियों की मार्फत महाराजा पर दबाव डाला गया कि वे अकाली फूला सिंघ को श्री अनंदपुर साहिब से निकाल कर अपने क्षेत्र में ले जाएं। डोगरों की साजिश द्वारा फ़िलौर के हाकिम दीवान मोती राम को आदेश भिजवाया गया कि वह चढ़ाई कर अकाली फूला सिंघ को जंग में से श्री अनंदपुर साहिब से वापिस ले आए। जब दीवान माखोवाल पहुँचा तो सिक्ख फ़ौज ने अकाली जी के विरुद्ध लड़ने से मना कर दिया। उधर से नवाब मालेरकोटला तथा राजा जसवंत सिंघ नाभा की फौज भी अंग्रेज़ों के कहने पर इसी उद्देश्य के लिए चढ़ आई, परन्तु उन्होंने भी अकाली जी के विरुद्ध हथियार उठाने से मना कर दिया। जब महाराजा को इस बात का पता चला तो वे खुद अकाली जी के पास पहुँचे और उन्हें प्यार से वापिस श्री अमृतसर ले आए।

श्री अमृतसर की संधि के समय जब अंग्रेज़ जरनैल और उसकी फ़ौज श्री अमृतसर ठहरी हुई थी, उस समय अकाली फूला सिंघ श्री अकाल तख़्त साहिब की सेवा में लगे हुए थे। अंग्रेज़ों की फ़ौज में सीहे मुसलमान फ़ौजी थे। मुहर्रम का दिन था और वे ताजिए निकालते हुए श्री अकाल तख़्त साहिब के पास से गुजरे और कितना ही समय वहां पर खड़े होकर शोर मचाते रहे। श्री अकाल तख़्त साहिब पर उस समय कीर्तन हो रहा था। अकाली जी ने कई बार उन मुसलमानों से आग्रह किया कि वे शांतिपूर्वक यहां से गुज़र जाएं, मगर वे शोरगुल करने से न टले।

फिर अकाली जी ने अपनी कृपाण उठाई महाराजा रणजीत सिंघ को दखल देना पड़ा। अकाली फूला सिंघ सिक्ख राज के हितकारी थे। उनका रोम-रोम सिक्ख गुरु साहिबान तथा सिक्ख राज के लिए तड़पता था।

पेशावर के हाकिम मुहम्मद अज़ीज़ खान ने बग़ावत कर दी तथा लाखों की संख्या में सेना इकट्ठी कर ली और सिक्ख राज के

विरुद्ध जंग छेड़ दी। नुशहरे लुंडा दरिया के पास उसने भारी तोपखाने की सहायता से सिक्ख फौज का पेशावर को जाने वाला रास्ता रोक लिया। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपनी फौज लेकर अटक पार किया। फिर उन्हें नुशहरे की तरफ दुश्मन फौज की तैयारी संबंधी सूचना मिली। सिंघों ने अरदास की और चढ़ाई शुरू कर दी। उस समय तक पीछे से तोपें नहीं पहुँची थीं, इसलिए तोपों के इन्तज़ार में मुहिम को कुछ देर टालना उपयुक्त समझते हुए महाराजा ने फौज को रुकने का हुक्म दिया। अकाली फूला सिंघ ने महाराजा से गर्ज कर कहा कि सिंघ अरदास कर चुके हैं, इसलिए चढ़ाई अभी होगी।

उन्होंने कहा कि अगर हम अरदास पर भी दृढ़ न रहे तो वाहिगुरु हमारी सहायता कैसे करेंगे? फिर भी महाराजा जब न माने तो अकाली जी ने अपने १५०० घुड़सवारों के साथ दरिया पार कर हमला बोल दिया। जब महाराजा रणजीत सिंघ ने इस साहस को देखा तो वे भी पीछे न रह सके और शाहजादा खड़क सिंघ, सरदार हरी सिंघ नलवा, स. शाम सिंघ अटारी आदि जरनैलों की कमान में सिक्ख फौज को आगे बढ़ने के लिए कहा। अकाली जी अपनी की गई अरदास के अनुसार आगे बढ़ते गए और दुश्मन-दल को चीरते हुए उन्होंने हज़ारों पठानों को मौत के घाट उतार दिया। महाराजा रणजीत सिंघ और अकाली फूला सिंघ की फौज ने इतना घमासान युद्ध किया कि दुश्मन के हौसले पस्त हो गए। महाराजा लड़ाई का जायज़ा ले रहे थे। फ्रांसीसी जरनैल वंतूरा पीछे से तोपें लेकर वहां पहुँच गया। जवाबी तोपों के फायर सिक्ख फौज द्वारा किए गए। मुहम्मद अज़ीज़ खान का रास्ता रोकने के लिए सेना भेजी गई, जो लुंडा दरिया पार कर अपने साथियों से मिलने की कोशिश कर रहा था।

अकाली फूला सिंघ जोश में आए और दूर तक दुश्मन की फौज में घुस गए तथा हाथों-हाथ जंग कर रहे थे। महाराजा रणजीत सिंघ ने अपने अन्य जरनैलों व सैनिकों को आगे बढ़ने के लिए ललकारा, ताकि अकाली जी की सहायता की जा सके। सारी की सारी सिक्ख फ़ौज ने तीनों तरफ से पठान सेना पर हमला बोल दिया। दुश्मनों की लाशें बिछ रही थी। सिंघों की तेगें बिजली की तेज़ी की भांति चल रही थीं और जयकारों की गूँज के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था। दुश्मन के पैर उखड़ रहे थे। इसी समय सिक्ख कौम का बहादुर जरनैल और पंथ का महान सरदार अकाली फूला सिंघ दो गोलियाँ लगने से शहीद हो गया। उनका अंतिम संस्कार शाही शानो-शौकत के साथ यहीं पर किया गया और यहीं पर लुंडा दरिया के किनारे उनकी यादगार बनाई गई।

निहंग सिंघों की गतका-कला

-डॉ. आतमा सिंघ *

गुरु की लाडली फौज 'निहंग सिंघ' ऐतिहासिक, शक्तिशाली और गौरवशाली जत्थेबंदी है। निहंग सिंघों की अपनी ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और गौरवमई विरासत है। ऐसी विरासत के धारक निहंग सिंघों की भाषा भी विलक्षण है, जिसे 'गड़गज्ज बोले' या 'ख़ालसे दे बोले' भी कहा जाता है। इसके साथ ही निहंग सिंघ वीरता भरपूर कारनामे करने में भी माहिर हैं, जिसमें गुरु का खेल 'गतका' को प्रदर्शन-कला के तौर पर पेश किया जाता है। निहंग सिंघों की जत्थेबंदी ने ही मुग़ल काल के तूफ़ानी दौर में सिक्ख पंथ को कायम रखने के लिए इंकलाबी संघर्ष किया, जो कि विश्व-इतिहास बन कर उभरा।

'निहंग' शब्द के एक से ज़्यादा अर्थ मिलते हैं। भाई कान्ह सिंघ नाभा ने 'निहंग' के अर्थ इस प्रकार किये हैं :—

१. निहंग— खड़ग, तलवार। ''बाहत निहंग। उट्ठत फुलिंग। '' (सलोह) तलवार के प्रहार से विसफुलिंग (चिंगारी) . . .

२. कलम, लेखनी।

३. घड़िआल, मगरमच्छ, नाकू (Alligator)

जनुक लहिर दरयाव ते निकसयो बडो निहंग।

(चरित्र २१७)[१]

(नाकू—— सारिक मछली के रूप में से है।

मगरमच्छ— छिपकली के रूप में से है।

छिपकली का स्वभाव है कि वह आँखें बंद करके भी सचेत रहती है। खुद किसी पर हमला नहीं करती। अगर कोई हमला करे तो काटती है, जिसका कोई इलाज नहीं। यही स्वभाव निहंग का है। किसी को कुछ नहीं कहता। अगर न माने, तो उसकी पकड़ में से बाहर नहीं हो सकता।

४. डिंग—— घोड़ा, अश्व, तुरंग।

''बिचरे निहंग। जैसे पिलंग।''

(विचित्र)

चित्रे वांङ छालां मारदे घोड़े विचरे।

५. निहशंक, वि—— जिसे मृत्यु की चिंता नहीं, बहादुर, दिलेर।

-निरभउ होइओ भइआ निहंगा॥
चीति न आइओ करता संगा ॥ (पन्ना ३९१)
— पहिलां दलां मिलंदिआं भेड़ पिआ निहंगा॥
(चंडी ३)

*सहायक प्रोफेसर, बाबा अजै सिंघ खालसा कॉलेज, गुरदास नंगल, (जिला गुरदासपुर)— १४३५२०, फोन : ९८७८८-८३६८०

६. निहसंग, निर्लेप, आत्मज्ञानी, दुंद (द्वन्द्व) का त्यागी

निहंग कहावै सो पुरख दुख सुख मंने न अंग।

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

७. सिंघों का एक वर्ग, जो शीश पर फरहरे वाला ऊँचा दमाला, चक्कर, तोड़ा, खंडा, कृपाण, गजगाह आदि शस्त्र और नीली वेशभूषा धारण करता है। निहंग सिंघ मृत्यु की आशंका का त्याग कर हर समय शहादत देने को तत्पर तथा माया से निर्लिप्त रहता है, जिसके लिए यह नाम है।''[२]

'निहंग' शब्द के जितने भी अर्थ हैं उनका सम्बन्ध वीरता और धर्म-निष्पक्षता के साथ है। निरपेक्ष रहने वाला बहादुर व्यक्ति ही निहंग है। वास्तव में निहंग सिंघ कोई अलग पंथ नहीं, बल्कि खालसा पंथ का ही अभिन्न अंग है, जिसने ख़ालसे के प्राचीन पहनावे (बाणे), परंपरा और जीवनङ्गशैली को आज तक संभाल कर रखने का यत्न किया है। अठारहवीं सदी में समूचा अमृतधारी खालसा निहंग ही था। बुड्ढा दल और तरुना दल के रूप में दल खालसा के विभिन्न जत्थे निहंग जत्थे ही थे। मिसलों तक खालसयी फौज की वेशभूषा और जीवनङ्ग शैली निहंगों वाली ही थी।

निहंग सिंघों ने जहाँ खालसयी बोले और पहनावा (वेशभूषा) संभाल कर रखा है, वहीं गुरु का खेल 'गतका' को भी संभाला हुआ है, जिसका प्रदर्शन विभिन्न प्रकार से किया जाता है। सांस्कृतिक संदर्भ में जहाँ निहंग सिंघों के पहनावें की महत्ता है, वहीं शस्त्र-कला के रूप में गतका भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। निहंग सिंघों की बोली में से वीरता के भाव झलकते हैं। निहंग सिंघों के बोले, जिन्हें 'गड़गज्ज बोले' भी कहा जाता है, विभिन्न संदर्भों में वीर रस-भरपूर होते हैं। आम शब्दावली को निहंग सिंघों ने विशेष शब्दावली या गुप्त शब्दावली में ढाल लिया है। स्त्रीवाचक शब्दों को पुरुषवाचक, मूल्यवान वस्तुओं के लिए तुच्छ शब्द, साधारण वस्तुओं के लिए बड़े शब्द, शब्द-विस्तार, शब्द-संकोच, बहुअर्थीय शब्द, पर्यायवाची शब्द, व्यंग्य अर्थों वाले शब्द और विशेष शब्द सृजित कर जहाँ निहंग सिंघों की भाषा निष्पक्षता की धारक होती है, वहाँ वीर रसी भी होती है। यह भाषा ही निहंग सिंघों की शस्त्र-विद्या का आधार बनती है। शस्त्र-विद्या के चाहे कई प्रकार हैं, मगर इनके समूचे अभ्यास को 'गतकाबाज़ी' नाम दिया जाता है।

'गतका' निहंग सिंघों की प्रदर्शन-कला का ऐसा प्रदर्शन है, जिसका मैदान-ए-जंग में भी प्रयोग किया जाता है और आम तौर पर प्रदर्शन भी किया जाता है। 'गतका' अरबी के शब्द 'ख़ुतका' से बना है। फ़ारसी में इसे 'खुतका' कहा जाता है, जिसका अर्थ है——

छोटा और मोटा डंडा। भंगाणी के युद्ध में हयात खान सरदार को महंत कृपाल दास ने कुतके से मारा था।[३] इसका वर्णन 'बचित्र नाटक' में मिलता है :

क्रिपाल कोपियं कुतको संभारी ॥
हठी ख़ान हय्यात के सीस झारी ॥
उट्ठी छिच्छ इच्छं कढा मेझ जोरं ॥
मनो माखनं मट्ट की कान्ह फोरं ॥ ४ ॥
तहा नंदचंद कीयो कोपु भारो ॥
लगाई बरच्छी क्रिपाणं संभारो ॥
तुटी तेग़ त्रिक्खी कढे जमदढ्ढं ॥
हठी राखयं लज्ज बंसं सनढ्ढं ॥ ८ ॥

भाई कान्ह सिंघ नाभा के अनुसार गतके से तात्पर्य—— गदायुद्ध की शिक्षा का पहला अंग सिखाने के लिए एक डंडा, जो तीन हाथ लम्बा होता है। इस पर चमड़े का खोल चढ़ा होता है। दायें हाथ में गतका और बायें हाथ में फरी (छोटी ढाल) लेकर दो आदमी आपस में खेलते हैं।[४] गतका दो शब्दों का सुमेल है 'गती+का'। तात्पर्य—— गति में रहने वाली वस्तु को 'गतका' कहा जाता है। 'गतका' गदायुद्ध की शिक्षा का पहला अंग है, जिसने गदा चलाने का माहिर बनना है, वो पहले 'गतका' सीखे। संभव है कि गदायुद्ध शब्द बदल कर 'गतका' बन गया हो।

विद्वानों ने शस्त्र को चार भागें में बांटा है:

अ) मुक्त—— जो हाथों से छोड़े जाएँ, जैसे चक्र।

आ) अमुक्त—— जो हाथों से न छोड़े जाएँ, तलवार, कटार आदि।

इ) मुक्तामुक्त—— जो हाथों से छोड़े भी जाएँ और हाथ में पकड़ कर भी इस्तेमाल किए जाएं। बरछा, गदा आदि।

ई) यंत्र-मुक्त—— जो बल द्वारा छोड़े जाएं, जैसे तीर, गोली आदि।[५].

गतके का सम्बन्ध अमुक्त शस्त्रों के साथ है। इसे हाथ में पकड़ कर दुश्मन पर वार किया जाता है। चाहे गतका साधारण शस्त्र है, इसका वार ज़्यादा मारू नहीं, मगर युद्ध-विद्या और शस्त्र-कला की शिक्षा के लिए इसे सबसे उत्तम माना जाता है।

सिक्ख पंथ में स्पष्ट रूप से गतके का प्रदर्शन श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय होना शुरू हुआ, परन्तु इसका बीज श्री गुरु नानक देव जी के समय में ही बोया गया था। सिक्ख पंथ भक्ति और शक्ति का सुमेल है। भक्ति के साथ शक्ति भक्त-बाणी में से भी दृष्टिगोचर होती है। भक्त साहिबान का स्वभाव चाहे वैरागमयी था और शांत रह कर प्रभु की प्राप्ति करना उनका मंतव्य था, लेकिन मन के विकारों, सामाजिक बुराइयों और अन्य घटनाक्रमों के लिए उन्होंने भी शक्ति का प्रदर्शन किया। भक्त कबीर जी ने स्पष्ट रूप से कह दिया :

गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥
खेतु जु मांडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥

सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥
पुरज़ा पुरज़ा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥
(पन्ना ११०५)

गतके का सम्बन्ध शक्ति के साथ है। इस शक्ति का आरंभ श्री गुरु नानक देव जी ने बाबर को अत्याचारी और ''राजे सीह मुकदम कुते'' कह कर किया था। यह एक प्रकार से शक्ति के रूप में गतके का आरंभ था। सिक्ख गुरु साहिबान ने धर्म-युद्ध के लिए यहादि कलम, यहादि कलाम और यहादि सैफ (कृपाण) तीन ढंग अपनाए। श्री गुरु नानक देव जी की शक्ति उनकी बाणी में से प्रकट होती है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ (पन्ना १४१२)

श्री गुरु नानक देव जी के वीर रस को श्री गुरु अंगद देव जी ने आगे बढ़ाया। खडूर साहिब में 'मल्ल अखाड़ा' खोला, जहाँ मुगदर फेरे जाते, जिससे गतके के कुछ अंगों की पूर्ति की जाती। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने मीरी और पीरी की दो कृपाणें धारण कर श्री अकाल तख़्त साहिब पर फ़ौजी प्रशिक्षण देना शुरू किया, जो कि स्पष्ट रूप से गतके का पहला प्रदर्शन था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को बाबा बुड्ढा जी ने शस्त्र-विद्या सिखायी। इस प्रशिक्षण के लिए अन्य मुसलमान उस्ताद भी लगाए गए। जब गुरु साहिब ने सिक्खों के हाथों में शस्त्र दिए तो ये उन्हें अपरिचित नहीं लगे थे, क्योंकि इन वस्तुओं से तो सिक्ख पहले से ही परिचित थे और थोड़े परिवर्तन रूप में वे इनका भली प्रकार से प्रयोग करना सीख गए। श्री अमृतसर सरोवर की खुदायी के समय इस्तेमाल किए जाते तसलों के समान ढालें उनके हाथ में थीं। इसी शक्ति के साथ श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने चार लड़ाईयां लड़ी। श्री गुरु हरिराय साहिब जी के समय २२०० घुड़ सवार थे। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने हाथ में छड़ी पकड़ी। श्री गुरु तेग़ बहादर साहिब को बहादुरी का पदनाम 'तेग़ बहादर' दिया गया था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने शस्त्रों की महत्ता को समझते हुए सिक्खों को एक शस्त्र पके तौर पर रखने का हुक्म दे दिया। शस्त्र-विद्या के अभ्यास के लिए एक दिन मुकर्रर किया गया। होला-महल्ला वाले दिन शस्त्र-कला के करतब दिखाए जाते और विजेताओं को पुरस्कार दिए जाते। इस अभ्यास द्वारा ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन में अनेक लड़ाइयां लड़ी। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी 'जपु साहिब' शस्त्र-विद्या को मुखातिब है। इसके वाले सभी छंद शस्त्र-विद्या की चालों और पैंतरों पर हैं। 'ससत्रनाम माला' भी एक तरह से शस्त्रों का कोश है :

— तुही कटारी दाढ़ जम तू बिछूओ अरु बान।
तो पति पद जे लीजीऐ रच्छ दास मुहि जानु ॥

११ ॥

बांक बज्र बिछूओ तुही तुही तबर तरवारि ॥

तुही कटारी सैहथी करीऐ रच्छ हमारि ॥ १२ ॥

तुमी गुरज तुम ही गदा तुम ही तीर तुफंग ॥

दास जानि मोरी सदा रच्छ करो सरबंग ॥१३ ॥

छुरी कलम रिपु करद भनि ख़ंजर बुगदा नाइ ।

अरध रिजक सभ जगत को मुहि तुम लेहु बचाइ ॥ १४ ॥

— असि क्रिपान खंडो खड़ग तुपक तबर अरु तीर ॥

सैफ सरोही सैहथी यहै हमारै पीर ॥ ३ ॥

तीर तुही सैथी तुही तुही तबर तरवारि ॥

नाम तिहारो जो जपै भए सिंधु भव पार ॥ ४ ॥

(श्री दसम ग्रंथ साहिब)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के बाद बाबा बंदा सिंघ बहादुर और सिक्ख मिसलों के साथ गतका-कला निहंग सिंघों की प्रदर्शन-कला का रूप धारण कर गई। 'बुड्ढा दल' और 'तरुना दल' के वजूद के समय गतका युद्ध-विद्या का प्रमुख अंग रहा। अब यह कला केवल निहंग सिंघों की जत्थेबंदियों तक ही सीमित होकर रह गई है। कुछ एक कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों में भी इसका प्रदर्शन होता है।

गतका निहंग सिंघों का जंगी-खेल है। गतके में मूलभूत रूप से तीन हाथ लम्बा चमड़े का लपेटा डंडा प्रयोग में लाया जाता है। कई बार हाथ में छोटी ढाल भी पकड़ी जाती है। गतके का प्रदर्शन डंडे से लेकर कृपाण तक चलता है। गतका-प्रदर्शन से पहले शरीर गरमाए जाते हैं, इसलिए डंड बैठकों और अखाड़े के गिर्द दौड़ लगाने का अभ्यास होता है। शस्त्रों का अभिवादन करने के संदर्भ में विशेष किस्म के साथ पैंतरा (स्नश्रश्ह्ल ङ्खश्रह्म) तैयार किया जाता है। पूरे जोश के साथ गतके को पकड़ कर वीर रसी शब्द बोले जाते हैं। आम तौर पर ये शब्द दसम ग्रंथ बाणी के सवय्ये या दोहरे होते हैं। ये शब्द आम भी होते हैं और विशेष वीर रसी साहित्यक रचनायों में से भी बोले जाते हैं :

१. काल तुही काली तुही तुही तेग़ अरु तीर ॥

तुही निसानी जीत की आजु तुही जगबीर ॥ ५ ॥

(श्री दसम ग्रंथ साहिब)

२. सिंघ चड़नगे शिकार

चौवी चौवी कोह दी उजाड़

बारीं कोहीं पड़ाअ

आउणगे छिआनवें करोड़ी चढ़ के

लै जाणगे तैनूं फड़ के

गुरू घर दिआ दोशीआ

दिन कट्टे जांदे कट्ट ला

स्री साहिब तेरे नक्क नूं

टूठा तेरे हत्थ नूं

मंगदा फिरें जगत नूं

आउणगे छिआनवें करोड़ी चढ़ के

लै जाणगे तैनूं फड़ के

बोले सो निहाल

सत स्री अकाल

३. कलगीआं वालिआ तेरीआं करनीआं ने,
साडा संगल गुलामी वाला तोड़ दित्ता।
मेल जोल के चहुंआं श्रेणीआं नूं,
नवें मोड़ वल्ल कौम नूं मोड़ दित्ता।
ऐसी मुरदिआं दिलां विच जान पाई,
फड़ के चिड़ी ने बाज़ मरोड़ दित्ता।
इक हत्थ माला दूजे तेग दे के,
शकती भगती नूं कट्ठिआं जोड़ दित्ता।

४. एथे लक्खां ही जंमण ते मरन विरले,
पैदा हुंदा ए कदे इनसान कोई।
देश, कौम अते वतन दी अणख बदले,
वार जांदा ए सूरमा जान कोई।
आपणी अणख बदले मरदे ने एथे,
हुंदा दूजिआं लई कुरबान कोई।
लोकीं जग्ग 'ते उहनां नूं पूजदे ने,
जिहड़े करदे ने कंम महान कोई।

५. पुत्तां वालिउ गुरू दशमेश जी ने,
किद्दां जंझ चढ़ाई है पुत्तरां दी।
दो नाल दादी अते दो नाल पिता,
वंड इस तर्हां पाई दो पुत्तरां दी।
दो चमकौर ते दो सरहंद अंदर,
जंझ एदां ढुकाई है पुत्तरां दी।
निरमल मौत दे नाल विआहे गए ने,
डोली घर नूं आई ए पुत्तरां दी।

६. मैं कलगीधर दा लाडला,
मेरे हत्थ विच नंगी तलवार।
मैं चुण चुण वैरी मारदा,
मैं कदे ना खावां हार।
मैं नाम धिआवां गुरू दा,
बोले सो निहाल।[६].

७. दसम पिता ने सानूं जनम दित्ता,
गुढ़ती मिली ए खंडे दी धार विच्चों।
सिक्खी सिदक सिर सोहणी दसतार,
साडा वक्खरा ए रूप संसार विच्चों।

८. गांधी वांगूं नहीं चरखे चलाए असीं,
खुद चरखड़ीआं 'ते चढ़े होए आं।
सिर दे के जित्थे है फीस लगदी,
असीं उहनां सकूलां विच पढ़े होए आं।
तूं की सानूं मारना वैरीआ ओए,
असीं तेरी उडीक विच खड़े होए आं।

९. कूंजां वांग कुरला के अज्ज लोकीं,
ऐवें नहीं दसमेश नूं याद करदे।
उह तां सुक्खणा इहो ही सुक्खदे ने,
मेरे मालका पूरी फरिआद करदे!
मेरा पिता लिआ, मेरे पुत्त लै ला,
मेरा वस्दा घर बरबाद करदे।
चुण लै नहूंआं दे नाल परवार मेरा,
मेरा खालसा पंथ आबाद करदे।

१०. आए राहां विच दुक्ख पहाड़ जिड्डे,
ढिल्ली पई पर तेरी रफतार वी ना।
विछड़ गिआ जो सरसा दे आण कंढे,
चेते आइआ उह तैनूं परवार वी ना।
होणी विच आकाश दे रोण लग्गी,
मिल सके अजीत जुझार वी ना।
हौला भार संसार दा करन बदले,
हत्थीं पुत्तां दा कीता ससकार वी ना।

११. हुंदे कदे मुथाज नहीं दीविआं दे
हर इक मस्सिआ उहनां दी चानणी ए।
जिहड़ी कौम दे अणखी पतंगिआं ने,
सेज शमां दी लाट 'ते मानणी ए।
बेगुनाह मासूमां दी रत्त पी के,
वरके जिन्हां इतिहास दे रंग लए ने।
आखर उहनां ही अत्थरे समें कोलों,
हक्क छातीआं ताण के मंग लए ने।

गतके का आरंभ करने के लिए दोनों खिलाड़ी आपस में लाठियां मिलाते हैं, जिसे 'सलामी' कहा जाता है और खेल शुरू करते हैं। गतका-प्रदर्शन में वार किये जाते हैं और रोके जाते हैं । विभिन्न दांव-पेच इस्तेमाल किए जाते हैं और विरोधी खिलाड़ी को हराने का यत्न किया जाता है। निहंग सिंघ नीले और केसरी बाणे पहन कर लोह-चक्करों के साथ दुमाले सजा कर जब गतका खेलते हैं तो दर्शक वाह-वाह कह उठते हैं। जब खेल ख़त्म किया जाता है तो खेलने वाले खिलाड़ी आपस में दोबारा लाठियां मिलाते हैं जिसे 'फतिह नामा' कहा जाता है। निहंग सिंघों की छावनियां या पड़ाव गतका की टकसालें हैं। यहाँ गतका खेला ही नहीं जाता, सिखाया भी जाता है। गतका सीखने का एक अनुशासन होता है। एक मर्यादा में रह कर गतका सीखा जाता है। उस्ताद निहंग सिंघ भुझंगियों (बच्चों) को शागिर्द धारण करते हैं। पहले उनके आचरण को मर्यादा में ढाला जाता है। चाल-चलन ऊँचा और नेक रखने की शिक्षा दी जाती है। बच्चे, बुज़ुर्ग और स्त्री पर वार नहीं करना, बल्कि उनकी ढाल बनना है। सादी और शुद्ध ख़ुराक खाने-पीने पर ज़ोर दिया जाता है। इसके बाद पैंतरा निकालना, गतका, मुर्हट्टियां, बिच्छूआ, चक्कर तथा अन्य शस्त्रों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

गतके का प्रदर्शन केवल डंडों के खेल तक ही सीमित नहीं, लोगों को आकर्षित करने के लिए बहुत-से और करतब भी दिखाए जाते हैं, जिन्हें गतका के अंतर्गत ही रखा जाता है। दो डंडों को बीचो-बीच पकड़ कर तेज़ी के साथ घुमाया जाता है। इन्हें मुर्हट्टियां कहा जाता है। मुर्हट्टियां घुमाने का मकसद वार रोकना और शारीरिक अंगों की कसरत करना होता है। कृपाण घुमाना भी प्रदर्शन-कला का उत्तम नमूना है। एक कृपाण मुँह में पकड़ कर दो कृपाणें हाथों में लेकर घुमाई जाती हैं। इसका मकसद है कि यदि

मैदान-ए-जंग में कृपाण हाथों से गिर जाए या हाथ कट जाए तो मुँह वाली कृपाण के साथ वार किये और रोके जा सकते हैं। कुछ एक उस्ताद निहंग सिंघ एक ही समय में आठ कृपाणें घुमाने के भी माहिर होते हैं। चार कृपाणें कमर के साथ बांध कर, दो मुँह में पकड़ कर और दो हाथों में पकड़ कर घुमाई जाती हैं। कृपाणों और ढालों से लड़ाई का प्रदर्शन भी गतके का ही एक अंग है। ढाल के बिना छोटी कृपाण को बिच्छूआ कहा जाता है। इसके द्वारा की गई लड़ाई भी गतके का ही भाग है। बिछूए का वार रोकने के लिए विरोधी को कलाई से या बाज़ू से पकड़ा जाता है। गतके के प्रदर्शन के समय चक्कर घुमाया जाता है। चक्कर को तेज़ घुमा कर उंगली पर टिकाया जाता है और साथ-साथ कई तरह के करतब दिखाए जाते हैं। घूमते हुए चक्कर को टेड़ा कर कर पीछे से निकाला जाता है। एक निहंग सिंघ दूसरे निहंग सिंघ पर घूमते हुए चक्कर को फेंकता है। दूसरा निहंग सिंघ इसे पकड़ कर इसका संतुलन कायम रखता है। घूमते हुए चक्कर को पकड़ कर लेटना और फिर उठना इस प्रदर्शन का शिखर होता है। वास्तव में चक्कर घुमाने का मकसद आते हुए तीरों को रोकना होता है। लड़ाई के मैदान में जहां गुरु साहिब बैठते थे, उनके सामने एक सिंघ चक्कर घुमाता रहता था, जिससे उनकी तरफ आने वाले तीर रुक जाते थे। मुकंद कोटला (कमंद कोटला) घुमाना भी गतके का महत्वपूर्ण अंग है। गतके में लंबे नेजों द्वारा भी लड़ाई की जाती है। वार रोकने के लिए नेजे के पिछले हिस्से का प्रयोग किया जाता है। इसे 'बाबा लोगों का खेल' भी कहा जाता है। कई बार एक निहंग सिंघ एक से ज़्यादा निहंग सिंघों के साथ गतका खेलता है, जिसे 'दंगल' या 'सवा लाख से एक लड़ाऊं' कहा जाता है।

चाहे गतका तीन हाथ लंबे डंडे का नाम है, मगर अर्थ-विस्तार के कारण यह शब्द एक प्रकार से ऐसी प्रदर्शन-कला का समुच्चय बन गया है जिसमें अनेक शस्त्रों और विधियों का प्रयोग किया जाता है। गतका पारंपरिक युद्ध-कला का रूप है, जिसे निहंग सिंघों ने विरासत के तौर पर संभाल कर रखा है।

संदर्भिका :—

१. महान कोश, पृष्ठ ७०४
२. महान कोश, पृष्ठ ७०४
३. तवारीख गुरू खालसा (पातशाही १०वीं) कृत ज्ञानी गिआन सिंघ, पृष्ठ ६८
४. महान कोश, पृष्ठ ३९५
५. महान कोश, पृष्ठ १३४
६. क्षेत्रीय खोज पर आधारित

लबु त कूड़ा नेहु

-डॉ. परमजीत कौर*

परमात्मा का प्रेम (मानव-जगत में) सर्वश्रेष्ठ प्रेम माना गया है। अकाल पुरख से प्रेम करने वाला सदा सुखी रहता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार नामक विकार उस पर हावी नहीं होते। तृष्णा परेशान नहीं करती। मन-तन प्रफुल्लित रहता है। प्रभु-प्रेम जीवन का आधार बन जाता है :

प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥
प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥
प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ ॥
प्रभ की प्रीति सद निरमल होइ ॥१ ॥ (पन्ना ३९१)

कोई जीव सारे धर्म-ग्रंथ कंठस्थ करके पढ़ता हो, तीर्थों पर भ्रमण करता हो, नित्य कई तरह के धार्मिक समझे जाने वाले कर्म करता हो, लेकिन यदि उसके अंदर परमात्मा का प्रेम नहीं है, तो उसको कभी मानसिक शान्ति तथा सुख प्राप्त नहीं होगा :

सासत सिंम्रिति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥
तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥
खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥
रंगु न लगी पारब्रहम ता सरपर नरके जाइ ॥
(पन्ना ७०)

जिन मनुष्यों को प्रभु-प्रेम प्राप्त नहीं होता उनका संसार में आना निष्फल हो जाता है। वे बहुमूल्य मानव-जन्म प्राप्त करके भी खाली हाथ संसार से चले जाते हैं, जैसे खाली घर में आया हुआ अतिथि खाली हाथ वापिस चला जाता है :

जिनी न पाइओ प्रेम रसु कंत न पाइओ साउ ॥
सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥
(पन्ना ७९०)

परमात्मा से प्रेम करने वाले ही प्रभु की दृष्टि में बुद्धिमान तथा सदाचारी माने जाते हैं :

जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है
ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ (पन्ना ४५०)

जब तक मन (सांसारिक विषयों के) रसों में लिप्त है, अंदर माया की तृष्णा है, हृदय में प्रभु-प्रेम पैदा नहीं हो सकता। मन को परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए माया का मोह, रसों के चसके छोड़ने जरूरी हैं :

प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥
जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥ (पन्ना ३२८)

श्री गुरु नानक देव जी प्रभु को विस्मृत करने वाले विषयों के रसों के बारे में बताते हैं कि महल-माड़ियां, हीरे-रत्न, सुंदर स्त्री, सफलता का नशा, मान का मद, बादशाहत, ऋद्धियां-सिद्धियां इन सब रसों में लिप्त हुआ जीव परमात्मा से दूर होता चला जाता है :

रसु सुइना रसु रुपा कामणि

*६२०, गली नंबर १, छोटी लाईन, संतपुरा, यमुनानगर (हरियाणा)— १३५००१, फोन : ९८१२३-५८१८६

रसु परमल की वासु ॥
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥

(पन्ना १५)

रसों में लिप्त जीव का सारा ध्यान रसों में ही रहता है। मन में नित्य नई-नई इच्छाएं पैदा होती रहती हैं। कई बार परमात्मा की भक्ति करते हुए, गुरु-घर में जाते हुए भी पदार्थों तथा मान-सम्मान की लालसा पूर्ण करने की इच्छा बनी रहती है। इच्छाओं की पूर्ति के लिए भजन-बंदगी की जाती है तथा यह समझा जाता है कि वह प्रभु से प्रेम करता है। भक्त शेख फरीद जी समझाते हैं कि परमात्मा के साथ यह प्रेम सच्चा नहीं झूठा है, क्योंकि बंदगी के बदले यदि कोई सांसारिक लालच है, स्वार्थ है, तो उसके पूर्ण न होने पर प्रेम टूट जाएगा। टूटे हुए छप्पर में से वर्षा के जल को गिरने से कितनी देर तक रोका जा सकता है!

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥
किचरु झति लधाईऐ छपरि तुटै मेहु ।।

(पन्ना १३७८)

लब (लबु) का अर्थ है—— विषयों के रसों का चसका। लब से ही लोभ पैदा होता है तथा लोभ सारे पापों का कारण बन जाता है। लोभ के कारण जीव झूठ के रास्ते पर चल पड़ता है, क्रोध करता है, विवेकहीन हो जाता है। उसे बुरे-भले की समझ नहीं रहती, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है :

— माइआ के देवाने प्राणी झूठि ठगउरी पाई ॥
लबि लोभि मुहताजि विगूते
इब तब फिरि पछुताई ॥ *(पन्ना ९३०)*
— बिखिआ कारणि लबु लोभु
कमावहि दुरमति का दोराहा हे ॥ (पन्ना १०५६)

लब के कारण लोभ तथा अहंकारग्रस्त जीव सतिगुरु के शबद की विचार नहीं करता, कभी सन्तुष्ट नहीं होता, सदैव विकारों की चर्चा करता रहता है :

मनमुख मूलहु भुलिआ
विचि लबु लोभु अहंकारु ॥
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै
सबदि न करहि वीचारु ॥ *(पन्ना ३१६)*

जैसे पानी को बूरु (बूर) खराब कर देता है वैसे ही लब जीवों को तबाह कर देता है, जीवन नष्ट हो जाता है :

लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥

(पन्ना ९६७)

लब, पाप, झूठ तथा काम साथी हैं। श्री गुरु नानक देव जी अलंकारिक भाषा में समझाते हैं कि संसार के जीवों में रसों का चसका मानों राजा है, पाप वजीर तथा झूठ चौधरी है। लब तथा पाप के दरबार में काम नायब है। इसे बुला कर सलाह ली जाती है। इनकी प्रजा ज्ञानविहीन होने के कारण मानों अन्धी हो चुकी है तथा तृष्णा रूपी आग की वसूली दे रही है :

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ।।
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ।।

(पन्ना ४६८)

ऐसे जीव को अपनी मृत्यु याद नहीं रहती :

जमकालु न सूझै माइआ जगु लूझै
लबि लोभि चितु लाए ॥ *(पन्ना ५८३)*

वास्तव में लब जीवों के लिए अंधकारमयी बन्दीगृह है। इनके अपने कमाए कुकर्म पैरों में लोहे की जंजीर बने पड़े हैं।

लब के अधीन रहने वाले जीव परमात्मा के प्रेम की प्राप्ति के मार्ग पर नहीं चल सकते, क्योंकि प्रभु के साथ धोखा, ठगी नहीं चलती :

धोहु न चली खसम नालि लबि मोहि विगुते॥
करतब करनि भलेरिआ मदि माइआ सुते॥
(पन्ना ३२१)

गुरु साहिब विस्तार से समझा रहे हैं कि जिस जीव-स्त्री का शरीर माया के मोह में लिप्त है तथा उसने इसको लब से रंग लिया है, वह जीव-स्त्री प्रभु-पति का सामीप्य प्राप्त नहीं कर सकती, क्योंकि उसका यह शरीर, यह जीवन प्रभु को पसंद नहीं आता :

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे
लीतड़ा लबि रंगाए॥
मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे
किउ धन सेजै जाए॥...
लब लोभ अहंकार की माती
माइआ माहि समाणी॥
इनी बाती सहु पाईऐ नाही
भई कामणि इआणी॥ *(पन्ना ७२१)*

निर्मल प्रभु के प्रेम को प्राप्त करने के लिए मन का पवित्र होना जरूरी है। जिस जीव के अंदर विषयों का चसका रूपी श्वान है, झूठ बोलने की आदत चूहड़ा (तुच्छ व्यक्ति) है तथा दूसरों को ठग कर खाना मुरदार है, पराई निंदा रूपी मैल है, क्रोध रूपी अग्नि चंडाल है, कई प्रकार के चसके हैं, अपने आप को बड़ा दिखाने का अहं है, वह निर्मल नहीं हो सकता :

लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु॥
पर निंदा पर मलु मुख सुधी
अगनि क्रोधु चंडालु॥
रस कस आपु सलाहणा ए करम मेरे करतार॥
(पन्ना १५)

प्रभु-प्रेम के लिए मन को चसकों से हटाना बहुत जरूरी है। यह चसका चाहे खाने-पीने का, मान-बढ़प्पन को प्राप्त करने का, इन्द्रियों के सुख भोगने का या चौधर का, किसी का भी हो, परमात्मा से दूर कर देता है। मनुष्य सदा अपने साथ ही जुड़ा रहता है। गुरु की शरण में आकर ही रसों के मोह से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि नाम-सिमरन के बिना मन के अंदर रहने वाले काम, क्रोध, मोह, लब, लोभ का मुकाबला नहीं किया जा सकता :

कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा॥
लबु लोभु अहंकारु सु पीरा॥
राम नाम बिनु किउ मनु धीरा॥ *(पन्ना ४१४)*

जो जीव साधसंगति के माध्यम से गुरु-शबद के साथ जुड़ता है, प्रभु के गुण-कीर्तन में लगकर नाम जपता है, उसके अंदर से लब रूपी खून निकल जाता है, मोह की जंजीरें कट जाती हैं :

— लोहू लबु निकथा वेखु॥ *(पन्ना ९५६)*
— लब लोभ लहरि निवारणं
हरि नाम रासि मनं॥
मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं॥
(पन्ना ५०६)

श्री गुरु नानक देव जी अलंकारिक भाषा में समझा रहे हैं कि इस संसार रूपी रणभूमि में सिपाहियों ने शरीर रूपी डेरे अधिकृत किए हुए हैं। प्रभु-खसम से रिजक लिखवा कर यहां आए हैं। स्वामी की रज़ा रूपी कार सिर पर कमाते हैं अर्थात् रज़ा के अनुसार चलते हैं। उन्होंने चसका, लोभ तथा अन्य विकार मन में से निकाल दिए हैं। ऐसे जीव-सिपाही ने शरीर-किले में प्रभु पातशाह को स्मृति में रखा है अर्थात् अन्दर हर समय सिमरन को बसाया है तथा कामादि पांचों के मुकाबले में कभी हार नहीं हुई :

लसकरीआ घर संमले आए वजहु लिखाइ ॥
कार कमावहि सिरि धणी लाहा पलै पाइ ॥
लबु लोभु बुरिआईआ छोडे मनहु विसारि ॥
गड़ि दोही पातिसाह की कदे न आवै हारि ॥
(पन्ना ९३६)

परमात्मा से प्रेम करने वाले लब, लोभ, अहंकार, माया, ममता, तृष्णा आदि को त्याग देते हैं, बहुत कम बोलते हैं। श्री गुरु अमरदास जी के अनुसार :

भगता की चाल निराली ॥
चाला निराली भगताह केरी
बिखम मारगि चलणा ॥
लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना
बहुतु नाही बोलणा ॥ (पन्ना ९१८)

श्री गुरु नानक देव जी के मत में जिस जीव में लब, लोभ, अहंकार है, वह (धार्मिक विद्या) पढ़ा हुआ भी मूर्ख है :

पड़िआ मूरखु आखीऐ
जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥ (पन्ना १४०)

ऐसा जीव परमात्मा की दरगाह में कबूल नहीं होता :

कूड़ि लबि जां थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ ॥
अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ
जिउ सुंञै घरि काओ (पन्ना ५८१)

गुरु साहिब सुचेत कर रहे हैं कि हे शरीर! तू लब-लोभ कर रहा है। तू बहुत असत्य अर्जित कर रहा है। व्यर्थ की दौड़भाग करता हुआ अपने सिर पर लब, झूठ आदि के प्रभावाधीन किए बुरे कर्मों का भार उठाता फिर रहा है। तेरे जैसे इस तरह व्यर्थ भटकते देखे हैं जैसे धरती पर राख :

अंम्रित काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥
लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि
बहुतु उठावहि भारो ॥
तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥
(पन्ना १५४)

जब मन नाम-रंग में रंग जाता है, तो लब समाप्त हो जाता है। जीभ नाम-सिमरन करते हुए नाम-रस में रंग कर सुंदर बन जाती है। मन प्रफुल्लित रहता है। परमात्मा की कृपा हो जाए तो ही जीव लब-लोभ से छुटकारा पाकर, सत्य के मार्ग पर चलता हुआ प्रभु-दर पर कबूल होता है :

— लबु लोभु अहंकारु चूका
सतिगुरू भला भाइआ ॥ (पन्ना ९१८)
— लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु ॥
(पन्ना १४८)

वर्तमान समय में महिलाओं की दशा पर चिंतन व मनन

*-डॉ. कशमीर सिंघ नूर**

महिलाओं के मान-सम्मान और कल्याण को मुख्य रखते हुए प्रत्येक वर्ष ८ मार्च को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है। आज के दौर में स्त्री को समाज में योग्य स्थान देने हेतु, उसका उत्पीड़न, शोषण रोकने हेतु, उसकी प्रगति के लिए संविधान में अनेक कानून बने हुए हैं, अनेक योजनाएं, नीतियां बनी हुई हैं, फिर भी प्रश्न एक नहीं अनेक हैं। क्या कन्या-भ्रूण हत्या पूरी तरह से रुक पाई है ? क्यों मानव को एक स्त्री के रूप में जन्म लेने से रोक दिया जाता है ? २१वीं शती में भी कई प्रांतों में स्त्रियों को समाज में पुरुषों के बराबर दर्जा क्यों नहीं मिल पाया है ? भले ही सती की कुप्रथा बंद हो चुकी है, परंतु दहेज की खातिर किसी औरत को जिंदा जलाकर मार देना कदापि उचित नहीं है। आए दिन औरतों को घरों, दफ्तरों, कारखानों, खेत-खलिहानों में और अन्य कई जगहों पर जिस्मानी छेड़छाड़ का, आर्थिक व मानसिक शोषण का शिकार होना पड़ता है। औरतों को इस तथाकथित आधुनिक व सभ्य, अति विकसित समाज में मान-सम्मान के साथ जीने का, जीविका कमाने का अधिकार एवं अवसर नहीं दिया जाता। प्रतिदिन असंख्य बच्चियों, युवतियों तथा महिलाओं के साथ बलात्कार होता है। उनकी रक्षा हेतु बने कानून नाकाम सिद्ध हो रहे हैं। औरतों की हत्याएं रुकने का नाम नहीं ले रही हैं।

सिक्ख धर्म के संस्थापक व प्रवर्तक, जगत्-गुरु श्री गुरु नानक देव जी के इस लोक में पावन आगमन के पूर्व समाज में महिलाओं की दशा, स्थिति अति शोचनीय थी। उन्हें समाज में वो आदर-सम्मान नहीं दिया जाता था जिसके लिए वे पात्र व अधिकारी थीं। श्री गुरु नानक देव जी ने लिंग के आधार पर स्त्रियों के साथ किए जाते भेदभाव का कड़ा विरोध किया। उन्होंने जहां जाति, जन्म और जिस्म के एक होने की बात कही, वहीं लिंग के आधार पर होते भेदभाव को भी समाप्त करने पर बल दिया।

पश्चिम के कुछ चिंतकों ने स्त्री को प्रकृति की एक 'मज़ेदार भूल' कहकर

**बी-एक्स-९२५, संतोखपुरा, हुशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४; फोन : ९८७२२-५४९९०*

तिरस्कृत किया, दुत्कारा। यूनानी चिंतक व दार्शनिक अरस्तू ने स्त्री को 'अपूर्ण प्रगति' कहा। तुलसीदास ने पशु, गंवार के साथ-साथ नारी को ताड़न अर्थात् डांट-डपट की पात्र कहा तथा साथ ही उसे आधा विष, आधा अमृत बताया। महात्मा बुद्ध ने तो यहां तक कह दिया कि स्त्री में आत्मा ही नहीं होती। इसलाम ने दो स्त्रियों की गवाही एक पुरुष की गवाही के बराबर बताई गई है। अभी भी कुछ मुस्लिम देशों में महिलाओं को मत (वोट) देने के अधिकार से वंचित रखा गया है और उन्हें मोटरगाड़ियां चलाने की आज्ञा भी नहीं दी गई है। खैर, बुर्का-प्रथा तो जारी ही है। घूंघट निकालने की प्रथा हमारे देश के कई अंचलों में अब भी मौजूद है। कुछ समय पूर्व साऊदी अरब में युवा महिलाओं को मोटरगाड़ियां चलाने की आज्ञा दे दी गई है।

श्री गुरु नानक देव जी ने बाणी में फरमान किया—— *''सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान।।''* अर्थात् औरत को क्यों बुरा कहा जाए, उसकी कोख से तो पुरुष, उत्तम पुरुष, महापुरुष, राजा, महाराजा जन्म लेते हैं।

स्त्री में एक नहीं, अनेक गुण हैं। घर का आभूषण होती है स्त्री।

प्रत्येक वर्ष सिर्फ एक दिन 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मना लेना काफी नहीं है। ऐसा सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, कामकाजी सुरक्षित माहौल बनाना होगा कि प्रत्येक उम्र की स्त्री स्वयं को हर पल सुरक्षित समझ सके। उसका किसी भी तरह का शोषण व उत्पीड़न न किया जाए। उसे किसी भी तरह से सताया न जाए। बाल-विवाह का विरोध किया जाना चाहिए। विधवा-विवाह को और भी ज्यादा बढ़ावा दिया जाना चाहिए। स्त्री को भी स्वतंत्रता के नाम पर अपने पारिवारिक मान-सम्मान को, सामाजिक मर्यादा को ठेस नहीं पहुंचानी चाहीए। स्त्री से भी ऐसी ही आशा की जाती है। चरित्रवान होना पुरुष व स्त्री दोनों के लिए सफल जीवन का प्रथम सोपान है।

सदियों से हमारे समाज में विधवा स्त्री को सती कराने की कुप्रथा चली आ रही थी। कुछ महापुरुषों व संतों-महात्माओं ने इसका विरोध किया। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने इस कुप्रथा के खिलाफ बहुत ज़ोरदार ढंग से आवाज़ उठाई और इसे बंद करने पर ज़ोर दिया। उन्होंने इस बुरी रस्म के विरुद्ध प्रचार करते हुए फरमान किया :

सतीआ एहि न आखीअनि
जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि
जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥१ ॥
भी सो सतीआ जाणीअनि

सील संतोखि रहंन्हि ॥
सेवनि साई आपणा
नित उठि संम्हालंन्हि ॥ *(पन्ना ७८७)*

इतिहासकार मुहम्मद लतीफ लिखता है कि श्री गुरु नानक देव जी के पद्-चिन्हों पर चलते हुए श्री गुरु अमरदास जी ने साफ व स्पष्ट शब्दों में सती होने की रस्म को अस्वीकार किया। इससे भी बढ़कर, उन्होंने विधवा विवाह रचाने की रीति चलाई। उस समय के रूढ़िवादी व पिछड़े समाज में गुरुओं के क्रांतिकारी व अमूल्य विचारों एवं कदमों ने स्त्रियों की दशा व स्थिति सुधारने में बहुत बड़ा व महत्त्वपूर्ण कार्य किया। हरेक अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर तथा अन्य अवसरों पर सिक्ख गुरुओं के महान समाज-सुधारक कार्यों को अवश्य स्मरण करना चाहिए और उनके विचारों से प्रेरणा व आगवानी लेते रहना चाहिए।

स्त्रियों के साथ क्रूर, जालिमाना, अन्यायपूर्ण, हिंसक व्यवहार करना बहुत बड़ा गुनाह है। ऐसा व्यवहार अमानवीय है। संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) द्वारा किए गए एक अध्ययन के मुताबिक विश्व भर में महिलाओं के लिए उनका घर ही सबसे अधिक खतरनाक स्थान सिद्ध हो रहा है।

दहेज प्रथा की समस्या के कारण ही कन्या-भ्रूण हत्या की समस्या पर पूरी तरह से काबू नहीं पाया जा सका है। भारत में दहेज प्रथा की वजह से होने वाले कत्ल ध्यान देने योग्य एक गंभीर विषय है। अध्ययन के अनुसार 'राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो' से प्राप्त आंकड़ों से पता चला है कि भारत में प्रत्येक वर्ष महिलाओं के हेने वाले कत्ल में ४० से ५० प्रतिशत कत्ल दहेज की समस्या के कारण होते हैं। 'मेरा भारत, श्रेष्ठ भारत' कहने से भारत श्रेष्ठ नहीं बन सकता। भारत को पूर्ण रूप से अपराध-मुक्त बनाकर ही श्रेष्ठ और महान् बनाया जा सकता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सिक्खों को स्पष्ट आदेश है कि बेटियों (महिलाओं) की हत्या करने वाले व्यक्तियों से रोटी-बेटी का रिश्ता नहीं रखना है। कभी किसी पराई स्त्री से शारीरिक संबंध नहीं बनाना है। उन्होंने पर-नारी-गमन का निषेध किया है। प्रचलित साखी के अनुसार उन्होंने अपने एक श्रद्धालु सिक्ख भाई जोगा सिंघ को एक कौतुक द्वारा एक वेश्या के कोठे पर जाने से रोक दिया था और उसे पतित होने से बचा लिया था। गुरु जी ने पर-तन-गामी नहीं होने का आदेश देकर स्त्री और पुरुष दोनों को अच्छे व पवित्र चरित्र वाले बनने के लिए कहा है। उच्च एवं साफ चरित्र मनुष्य को आचरण की बुलंदी पर ले जाता है। दुष्चरित्रता पतन का कुआं सिद्ध होती है।

सांस्कृतिक और सामाजिक पक्ष से भी स्त्रियों को जलील करने का कई बार प्रयत्न किया जाता है और कई पुरुषों की शब्दावली स्त्रियों को मानव मानने की अपेक्षा मात्र भोग की वस्तु समझने वाली होती है। 'वर (दूल्हा)-दान' की जगह 'कन्या-दान' ही क्यों कहा जाता है? निकृष्ट व घटिया मानसिकता वाले पुरुष आपसी लड़ाई-झगड़ों के दौरान मां-बहन के नाम पर गंदी गालियां देते हुए महिलाओं का घोर अपमान करते हैं। गीतों, फिल्मों, टी वी कार्यक्रमों, विज्ञापनों में महिलाओं के तन का प्रदर्शन करना उनके मान-सम्मान व गरिमा को चोट पहुंचाना है। बहुत-से क्षेत्र व पक्ष हैं, जिनमें महिलाओं को बराबर अधिकार, पर्याप्त अवसर मिलने अभी शेष हैं। प्रत्येक वर्ष 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' पर महिला सशक्तिकरण की बातें हर मंच पर बहुत बढ़-चढ़कर की जाती हैं, परंतु वास्तव में इस संबंध में उतना ठोस काम नहीं हो रहा है, जितना होना चाहिए।

हमारे देश के राजनीतिक क्षेत्र में भी महिलाओं को पर्याप्त अवसर प्रदान नहीं किए जा रहे हैं। सन् २०१८ में संसद में पेश किए गए आर्थिक सर्वेक्षण के मुताबिक लोक सभा में ११.८ प्रतिशत तथा राज्य सभा में केवल ११ फीसदी महिलाएं सांसद थीं। वर्ष २०१६ में देश की विभिन्न विधान सभाओं के कुल ४११३ विधायकों में महिलाओं की भागीदारी मात्र ९ फीसद थी। सन् २०१० से लेकर २०१७ तक महिलाओं की हिस्सेदारी में एक प्रतिशत की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। बेशक पंचायती राज्य संस्थाओं में महिलाओं का प्रतिनिधित्त्व कानूनी तौर पर ५० प्रतिशत तय है, किंतु सामाजिक हालात ऐसे हैं कि निर्वाचित महिलाओं की जगह सारा सरकारी व अन्य काम उनके भाई, पिता, ससुर या उनके पति ही करते हैं। वे तो केवल जहां जरूरी हो, वहां अपने हस्ताक्षर ही करती हैं। नगर पंचायतों, नगर पालिकाओं, नगर निगमों में भी यही सूरते-हाल है। और तो और, किसी भी स्तर के चुनाव में महिला उम्मीदवारों के चुनावी पोस्टर्स पर उनकी तस्वीर छोटी और उनके भाई, पिता या फिर पति की तस्वीर बड़ी प्रकाशित की जाती है। यह कैसा नारी सशक्तिकरण हुआ? प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं का आत्मविश्वास, आत्मसम्मान बढ़ाया जाना जरूरी है।

यू. पी. सिक्ख मिशन, हापुड़ की स्थापना

*– स. ब्रिजपाल सिंघ**

सिक्ख मिशन की स्थापना : धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर के अधीन यू. पी. सिक्ख मिशन हापुड़ की स्थापना १९४० ई. में हुई। पहले २५० गज़ जगह ख़रीदी गई। इसके बाद धर्म प्रचार कमेटी द्वारा ३००० गज़ जगह इसके साथ लगती और खरीद ली गई। संगत के सहयोग से १९५५ ई. में गुरुद्वारा गुरू नानक दरबार, हापुड़ की सेवा सम्पूर्ण हुई। स. ईशर सिंघ मझैल, प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी भी यहाँ पर पहुँचे।

सिक्ख मिशन के सहयोगी :

१. स. रघुवीर सिंघ संधावालिया रईस राजासांसी मालिक सिंभावली शूगर मिल्स, ज़िला मेरठ वर्तमान ज़िला हापुड़।
२. कुंवर सुरजीत सिंघ सुपुत्र राव दिग्विजय सिंह जी रईस, कुचेसर
३. स. नंद सिंघ इंजीनियर, भारत नगर, नई दिल्ली
४. स. संपूरन सिंघ राजू, ठेकेदार, नई दिल्ली
५. स. अरजन सिंघ, कोर्ट इंस्पेक्टर, मेरठ
६. स. अजब सिंघ, हेंड मास्टर, गाँव सादुल्लापुर सिक्खों का, ज़िला मेरठ
७. ज्ञानी हरदित्त सिंघ, प्रिंसिपल, गुरू नानक विद्या भंडार, गुरुद्वारा रकाबगंज, नई दिल्ली
८. स. जस्सा सिंघ, मालिक ट्रांसपोर्ट कंपनी, हापुड़
९. स. सुमेर सिंघ यादव, गाँव रझैड़ा, ज़िला हापुड़

सिक्ख मिशन के प्रचार-केंद्र :

१. गांव बढला सिक्खों का
२. गांव सादुल्लापुर सिक्खों का
३.सिंभावली
४. मलकपुर
५. रहाउती
६. सिक्ख इंटर कॉलेज, नारंगपुर, जोया, ज़िला मुरादाबाद वर्तमान ज़िला अमरोहा
७. गुरु नानक इंटर कालेज, कन्करखेड़ा, मेरठ
८. गाँव खंडसाल कलाँ, ज़िला मुरादाबाद, वर्तमान ज़िला अमरोहा। (स. रजिंदर सिंघ, जो सिक्ख मिशनरी कॉलेज, श्री अमृतसर के प्रिंसिपल रहे, यहाँ के निवासी थे।)
९. गांव पन्याली, ज़िला सहारनपुर
१०. गांव डालूवाला, ज़िला हरिद्वार
११. गांव रझैड़ा, ज़िला हापुड़

यू. पी. सिक्ख मिशन की स्थापना के समय प्रचारकों के नाम :

१. ज्ञानी बादल सिंघ, प्रभारी
२. ज्ञानी साधू सिंघ भौरा
३. ज्ञानी सरम सिंघ
४. ज्ञानी तेजा सिंघ, लिपिक
५. मास्टर रणधीर सिंघ, प्रचारक
६. भाई पिआरा सिंघ, प्रचारक
७. भाई प्रताप सिंघ, रागी

*प्रभारी, यू. पी. सिक्ख मिशन, हापुड़— २४७१०१, फोन : ९८३७६-५२२२४

८. भाई करम सिंघ, रागी
९. भाई बलबीर सिंघ, रागी
१०. भाई तारा सिंघ, रागी
११. भाई इदर सिंघ, प्रचारक
१२. भाई सिवचरन सिंघ, उप प्रचारक
१३. भाई तेग सिंघ, लिपिक
१४. भाई निरंजन सिंघ, प्रचारक
१५. भाई मक्खण सिंघ, प्रचारक
१६. भाई फतिह सिंघ, प्रचारक
१७. भाई गुरमुख सिंघ, प्रचारक

भाई मक्खण सिंघ हारमोनियम, भाई फतिह सिंघ ढोलक और भाई निरंजन सिंघ चिमटा बजाते थे। ये तीनों सिंघ कार्यक्रम बना कर गाँवों का दौरा करते थे। ये लोग एक साज़, एक बिस्तर और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सवारी भी साथ लेकर चलते थे।

प्रथम सिक्ख कान्फ्रेंस : प्रथम सिक्ख कान्फ्रेंस १९४०-४१ ई. में उत्तर प्रदेश के ज़िला बुलंदशहर अलीगढ़ में हुई, जिसमें लगभग ३५००० प्राणी अमृत छक कर गुरु वाले बने। अमृत अभिलाषियों को धर्म प्रचार कमेटी की तरफ से ककार भेटा-रहित (नि:शुल्क) दिए गए। एक लाख का इकट्ठ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, धर्म प्रचार कमेटी यू. पी. सिक्ख मिशन हापुड़-अलीगढ़ के प्रबंध में हुआ। धार्मिक नेताओं को हाथी पर बैठा कर अति मान-सम्मान सहित लाया गया। तब भाई अमर सिंघ, सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और ज्ञानी बादल सिंघ प्रभारी थे।

द्वितीय सिक्ख कान्फ्रेंस : द्वितीय सिक्ख कान्फ्रेंस २७ अक्तूबर, १९४० ई. को सिंभावली शूगर मिल्स राजा साहिब के कारख़ाने में हुई। इन दोनों कान्फ्रेंसों में बड़ी संख्या में पंजाब, दिल्ली और उत्तर प्रदेश से बड़े-बड़े नेता, नानक- पंथी साधु-संत, सहिजधारी, राजे-रईस, ज़मींदार आदि शामिल हुए और १९४१ ई. की मर्दुमशुमारी की रूप-रेखा तैयार की गई। इन कान्फ्रेंसों में लगभग ३५००० प्राणी अमृत छक कर सिंघ सजे।

तृतीय सिक्ख कान्फ्रेंस : १९४० ई. में ही यू. पी. सिक्ख बोर्ड द्वारा स. ईशर सिंघ मझैल, प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की अध्यक्षता में नूरपुर, ज़िला बिजनौर में एक भारी कान्फ्रेंस हुई। काफ़ी नये सजे सिंघों ने अमृत-पान किया।

गाँव बढला सिक्खों का : यह वो मुबारक गाँव है, जहाँ हापुड़ मिशन की बुनियाद रखी गई थी। १९२९ ई. में पहले तीन प्रचारक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी से आए। उनमें से एक का पक्का हेंडक्वाटर इसी गाँव में रखा गया। यह गाँव सन् १९२९ से १९३६ ई. तक प्रचार का बड़ा केंद्र रहा। मिसलों के वक्त जो जत्थे उत्तर प्रदेश में हमला किया करते थे, मालूम होता है कि वे समाज-सुधार के साथ-साथ धर्म-प्रचार भी किया करते थे। ज़िला मेरठ के निहायत उपजाऊ और रमणीय क्षेत्र परीक्षितगढ़ मवाना बहसूमा आदि पर स. नैन सिंह गुर्जर का कब्ज़ा था। ब्राह्मणों की कुछ छोटी-छोटी रियासतें थीं। इन्होंने राजा नैन सिंघ को तंग करना चाहा। राजा नैन सिंह को कोई सहायता नहीं मिली तो उसने सिंघों के साथ संपर्क स्थापित किया। सिंघों ने एक शर्त पेश की कि आप अमृत पान कर लो तो हर प्रकार से आपकी सहायता की जाएगी। राजा नैन सिंह अमृत छक कर सिंघ सज गया और खालसा फ़ौज उसकी सहायता के लिए आई। राजा नैन सिंघ के दुश्मनों का वध कर खालसा फ़ौज वापस जाने लगी तो राजा नैन सिंघ

ने दो शूरवीर सिंघों, जो बुखारपुर रियासत पटियाला के रहने वाले थे, को अपने पास रख लिया और परीक्षितगढ़ के निकट पूरा गाँव उनके सुपुर्द कर दिया, जिसका नाम 'बढला सिंघों का' है। ज़िला मेरठ का यह गाँव अब भी सिक्खी का केंद्र है। प्रिं. ज्ञानी दिआल सिंघ, जो गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब विद्यालय में प्रिंसिपल रहे थे, वे इसी गाँव के थे। ज्ञानी जी ने उत्तर प्रदेश में गरीब परिवारों के कई बच्चों को गाँव सरकड़ा कमाल, ज़िला अमरोहा, उत्तर प्रदेश में दो वर्ष तक गुरबाणी-संगीत का प्रशिक्षण दिया। ये बच्चे आज देश-विदेश में सिक्खी का प्रचार कर रहे हैं। फिर तीन वर्षीय पाठ्यक्रम (गुरु नानक विद्या ट्रस्ट भंडार, रकाबगंज से करवा कर) गुरबाणी-संगीत विद्या १९२४ ई. से प्रारंभ हुआ।

गाँव सादुल्लापुर सिक्खों का : उस समय इस गाँव में सिक्खों की संख्या ३०० के लगभग थी। मिशन की तरफ से ज्ञानी तारा सिंघ प्रचारक को ग्रंथी नियुक्त किया गया। १४ जुलाई, सन् १९५४ ई. को प्रधान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने इस गाँव का विशेष रूप से दौरा किया। समूचे उत्तर प्रदेश में यह गाँव गुज्जर सिक्खों का एक मात्र चढ़दी कला वाला गाँव था। यह गाँव दास (लेखक) ब्रिजपाल सिंघ का अपना गाँव भी है। अगस्त, २०२१ ई. में इस गांव के ४० सिक्ख नौजवान बच्चों की सामूहिक दसतारबंदी सिंघ साहिब ज्ञानी हरप्रीत सिंघ, जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब द्वारा की गई।

(सब-मिशन) सिक्ख मिशन अलीगढ़ : भाई अमर सिंघ, सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से इस अलीगढ़ क्षेत्र में यू. पी. सिक्ख मिशन, हापुड़ के सहयोग से उच्च स्तर पर सिक्खी का प्रचार किया गया। ज्ञानी साधू सिंघ भौरा और ज्ञानी शरम सिंघ ने भी बहुत मेहनत की।

यू. पी. सिक्ख मिशन के आरंभ होने से अब तक इंचार्ज (प्रभारी) साहिबान की सूची:—

१. ज्ञानी बादल सिंघ
२. ज्ञानी गुरबचन सिंघ वैद्य
३. ज्ञानी गुरदास सिंघ
४. ज्ञानी फौजा सिंघ
५. ज्ञानी दलीप सिंघ फक्कर
६. ज्ञानी जगदीश सिंघ
७. ज्ञानी मेघ सिंघ
८. ज्ञानी मलकीत सिंघ डल्ला
९. ज्ञानी दलीप सिंघ फक्कर
१०. ज्ञानी हरिभजन सिंघ लहरी
११. ज्ञानी करनैल सिंघ (दफ़्तरी इंचार्ज)
१२. ज्ञानी जगतार सिंघ मिशनरी
१३. ज्ञानी हरिभजन सिंघ लहरी
१४. ज्ञानी जगतार सिंघ जंगीआणा
१५. ज्ञानी केसव सिंघ
१६. स. सुखदेव सिंघ तुड़
१७. ब्रिजपाल सिंघ (यू. पी.) वर्तमान समय में भी।

यू. पी. सिक्ख मिशन का प्रचार-क्षेत्र (उत्तर प्रदेश)

गुरुद्वारा बाग कुचेसर : राव दिग्विजय सिंह ने गुरुद्वारा बाग़ कुचेसर का प्रबंध यू. पी. सिक्ख मिशन हापुड़ को दिया। सन् १९५३ ई. में प्रबंधाधीन चल रहे गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध (बाद में) सचखंड श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर के पास आया।

प्रबंध अधीन चल रहे गुरुद्वारा साहिबान :

१. गुरुद्वारा गुरु नानक दरबार, हापुड़

२. सब-आफिस सिक्ख मिशन, अलीगढ़

३. गुरुद्वारा नक्का कुआँ, गढ़मुक्तेश्वर

४. गुरुद्वारा यक बगड़ी, गजरौला

५. गुरुद्वारा संत सभा नगीना, बिजनौर

६. गुरुद्वारा गुरु नानक टिल्ला, वृंदावन, मथुरा (चरण-स्पर्श प्राप्त स्थान पहली पातशाही)

७. गुरुद्वारा भक्त कबीर जी, मगहर, जिला गोरखपुर

८. सब-आफिस लखनऊ (आसियाना कालोनी कोठी) : अलीगढ़ के निकट बड़ी संख्या में लोग सिंघ सजे, जिनमें सिक्ख मिशन की अहम भूमिका है।

यू. पी. सिक्ख मिशन की प्राप्ति : धर्म प्रचार कमेटी के अधीन चल रहे यू. पी. सिक्ख मिशन, हापुड़ द्वारा उत्तर प्रदेश में सिक्ख धर्म के प्रचार-प्रसार के कार्य निरंतर जारी हैं। हापुड़ के आस-पास पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जत्थेदार बघेल सिंघ जी के साथ आए सिक्ख योद्धा, जो इस क्षेत्र में बस गए थे, के परिवार मानते श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को हैं। दु:ख-सु:ख के समय गुरु साहिब जी का ही ओट-आसरा लेते हैं। १९८४ ई. में इन गाँवों में या पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सिक्खों का जानी-माली नुकसान बहुत कम हुआ था, क्योंकि इन गाँवों में बसते लोगों ने सिक्खों की मदद की थी। इनके गोत्र भी सिक्खों के गोत्र के साथ मिलते-जुलते हैं, जैसे— भुल्लर, सिद्धू, संधू, बराड़, गिल्ल, ढिल्लों, मान आदि। इनके साथ बड़ी संख्या में अन्य बिरादरियों में से भी सिक्ख सजे— गुर्जर, जाट, नाई, रविदासीए, यादव, लोधे (राजपूत) वणजारे, रमईए, सिकलीगर आदि।

रमैया सिक्खों के २२ गाँव : उत्तर प्रदेश के ज़िला बिजनौर में रमैया सिक्खों के २२ गाँव हैं, जिनमें पूरी चढ़दी कला वाले सिक्ख हैं। इन गाँवों में यू. पी. सिक्ख मिशन, हापुड़ के द्वारा सिक्खी का प्रचार किया जा रहा है।

पंजाब प्रांत से बाहर सबसे बड़ा मिशन यू. पी. सिक्ख मिशन, हापुड़ है। १९४० ई. से लेकर अब तक लाखों की संख्या में लोगों को यू. पी. सिक्ख मिशन द्वारा अमृत छकाया गया है और लाखों की संख्या में सिंघ सजाए गए हैं। इसमें यू. पी. सिक्ख मिशन सब-आफिस अलीगढ़ का विशेष योगदान रहा है। धर्म प्रचार कमेटी द्वारा उत्तर प्रदेश के सिक्खों को प्रचारक, रागी, सेवादार के रूप में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी में भर्ती कर सर्विस में रखा, जो कि सिक्खी को प्रफुल्लित करने में मील-पत्थर साबित हुआ।

मध्य प्रदेश सिक्ख मिशन, इन्दौर : मध्य प्रदेश में भी ५ प्रचारक और एक रागी जत्था सेवा निभा रहे हैं।

वर्तमान समय में कार्यरत कर्मचारी : उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश में इस समय २५ प्रचारक प्रचार की सेवा निभा रहे हैं। इनके अलावा २ लिपिक, २ धार्मिक अध्यापक, ५ ग्रंथी सिंघ, १ कवीशरी जत्था, ३ रागी जत्थे, ३ हैल्पर, १७ सेवादार, ५ सफ़ाई सेवक, १ चालक सेवा निभा रहे हैं। धर्म प्रचार कमेटी, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर इन मिशनों के माध्यम से सिक्खी के प्रचार-प्रसार के लिए लाखों रुपए ख़र्च कर रही है। धर्म प्रचार कमेटी के इस प्रयत्न से बहुत सार्थक परिणाम प्राप्त हो रहे हैं।

ख़बरनामा

आस्ट्रिया में सिक्ख धर्म रजिस्टर्ड करवाने वाले सिक्ख नौजवान सम्मानित

श्री अमृतसर : ३१ दिसंबर : आस्ट्रिया में सिक्ख धर्म रजिस्टर्ड करवाने का यत्न करने वाले सिक्ख नौजवानों को श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ द्वारा सम्मानित किया गया। श्री अकाल तख़्त साहिब सचिवालय में जत्थेदार ज्ञानी हरप्रीत सिंघ ने सिक्ख धर्म रजिस्टर्ड कमेटी आस्ट्रिया के नुमायंदों को सम्मानित करते हुए उनके प्रयत्न की प्रशंसा की। इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) और सदस्य भाई गुरबख़्श सिंघ खालसा भी उपस्थित थे।

यहाँ पहुँचे सिक्ख धर्म रजिस्टर्ड कमेटी आस्ट्रिया के मुख्य सेवक भाई हरमन सिंघ ने बताया कि आस्ट्रिया सिक्ख धर्म रजिस्टर्ड करने वाला यूरोप का पहला देश है। यहाँ अब सिक्ख बच्चों के जन्म प्रमाण-पत्र में सिक्खी को धर्म के तौर पर लिखा जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस कार्य के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी का विशेष योगदान रहा है, क्योंकि आवश्यक दस्तावेज़ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सदस्य भाई गुरबख़्श सिंघ खालसा के सहयोग से शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा उपलब्ध करवाए गए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि आस्ट्रिया में बसते सिक्खों के मामलों के प्रति उनकी जत्थेबंदी निरंतर कार्यशील रहती है। भाई हरमन सिंघ ने कहा कि उनकी जत्थेबंदी का उद्देश्य सिक्खी को देश के अंदर परिभाषित करना है और इस सम्बन्ध में वहाँ के मूल लोगों के साथ विचार-विमर्श किया जाता है। उन्होंने श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकारियों का सम्मान व सहयोग देने के लिए धन्यवाद किया।

इस अवसर पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल) ने कहा कि सिक्ख धर्म ग्लोबल स्तर पर अपनी पहचान निर्धारित कर चुका है और प्रयत्नशील सिक्ख नौजवान मौजूदा समय में पूरी दुनिया में अपने यत्नों से सिक्खी की रस्मों और मर्यादा को उभारने में कार्यशील हैं। आस्ट्रिया में सिक्ख नौजवानों का कार्य बेहद प्रशंसनीय है और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी इन्हें हर स्तर पर सहयोग देने के लिए वचनबद्ध है।

इस अवसर पर आस्ट्रिया से पहुँचे सिक्ख नौजवान भाई गुरशरन सिंघ, स. सतरीबन सिंघ, स. सिमरजीत सिंघ, स. वरिंदर सिंघ आदि उपस्थित थे।

सिक्ख फौजियों को लोहटोप पहनाने की तजवीज़ शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा मूलतः रद्द

श्री अमृतसर : ३ फरवरी : राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग द्वारा सिक्ख फौजियों को लोहटोप पहनाने की तजवीज़ से सम्बन्धित सिक्ख संस्थायों के साथ विचार-चर्चा करने के लिए बुलायी सभा में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि सिक्ख-आचरण और पहचान के मामले में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप बरदाश्त नहीं किया जा सकता, इसलिए किसी भी सूरत में सिक्ख फौजियों के सिर पर लोहटोप स्वीकार्य नहीं है।

नयी दिल्ली में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के कार्यालय में हुई सभा के दौरान श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार के दिशा-निर्देश पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी द्वारा भेजे शिष्टमंडल में शामिल शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के महासचिव भाई गुरचरन सिंघ (ग्रेवाल), सदस्य स. रघबीर सिंघ सहारनमाजरा, दिल्ली से सिक्ख नेता भाई सुखविंदर सिंघ बब्बर, बीबी रणजीत कौर और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के उपसचिव स. जसविंदर सिंघ जस्सी ने आयोग के चेयरमैन स. इकबाल सिंघ लालपुरा के समक्ष सिक्ख फौजियों को लोहटोप पहनाने की सरकार की तजवीज़ पर सख़्त एतराज़ जताते हुए एक सूत्रीय विचार रखा कि लोहटोप के मामले पर कोई भी तर्क या विचार-चर्चा नहीं हो सकती। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग द्वारा सिक्ख फौजियों को लोहटोप पहनाने के मामले पर सहमति बनाने की नीयत से कुछ पूर्व सिक्ख अधिकारियों और धार्मिक शख़्सियतों के साथ विचार-चर्चा की पेशकश को मूलतः अस्वीकार करते हुए अपना लिखित पक्ष देकर कहा कि सिक्ख धर्म में जब टोपी पहनना वर्जित है तो फिर लोहटोप पहनने के मामले में कोई भी चर्चा करने का सवाल ही पैदा नहीं होता। उन्होंने इतिहास में से मिसालें देते हुए कहा कि विश्व-युद्धों व भारत की आज़ादी के बाद देश की सुरक्षा के लिए लड़ी गई जंगों के दौरान सिक्ख सिपाहियों ने कभी भी लोहटोप नहीं पहना। उन्होंने कहा कि गुरु साहिबान द्वारा प्रदत्त दसतार सजाकर सिक्ख फौजियों ने हमेशा दुश्मन का मुकाबला किया और उन्हें लोहे के चने चबवाए।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के शिष्टमंडल ने अपना लिखित पक्ष राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग को सौंपते हुए सिक्ख इतिहास, परंपरा और सिक्ख रहित मर्यादा को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार से माँग की है कि सिक्ख फौजियों को लोहटोप पहनाने का फ़ैसला तुरंत वापस लिया जाए।

पाकिस्तान में सिक्ख भाइयों के केशों की बेअदबी करने की एडवोकेट धामी ने की घोर निंदा

श्री अमृतसर : ६ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने पाकिस्तान के ज़िला श्री ननकाणा साहिब में दो सिक्ख भाइयों के केशों की बेअदबी करने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। एडवोकेट धामी ने कहा कि पाकिस्तान में पिछले समय के दौरान कई बार सिक्खों पर हमले हो चुके हैं, परन्तु पुलिस द्वारा दोषियों के ख़िलाफ़ उचित कार्यवाही नहीं की जाती। उन्होंने कहा कि ताज़ा मामले में भी पुलिस द्वारा किसी भी दोषी को गिरफ़्तार नहीं किया गया, बल्कि सिक्खों पर ही दबाव बनाया जा रहा है। एडवोकेट धामी ने पाकिस्तान सरकार से माँग की है कि मामले की गंभीरता को देखते हुए दोषियों के ख़िलाफ़ तुरंत कार्यवाही की जाए। उन्होंने भारत सरकार से भी अपील की है कि वह कूटनीतिक स्तर पर पाकिस्तान सरकार के साथ बात कर सिक्खों की सुरक्षा-व्यवस्था सुनिश्चित करे।

तुर्की और सीरिया में आए भूकंप के कारण पीड़ितों के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने की सहायता की पेशकश

श्री अमृतसर : ७ फरवरी : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान एडवोकेट हरजिंदर सिंघ धामी ने तुर्की और सीरिया में भूकंप के कारण हुए जानी और माली नुकसान पर दु:ख प्रकट करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तरफ से सहायता की पेशकश की है। एडवोकेट धामी ने भारत में तुर्की के राजदूत फिरात सुनेल, तुर्की में भारत के राजदूत डॉ. वरिंदरपाल, सीरिया में भारतीय दूतावास के इंचार्ज श्री सुरिंदर कुमार यादव और भारत में सीरिया के राजदूत डॉ. बस्सम सिफेदीन अलखातिब को पत्र लिख कर सहानुभूति प्रकट की है। उन्होंने कहा कि सिक्ख धर्म में 'वंड (बांट कर) छकना' और 'सरबत्त का भला' मांगना गुरु साहिबान द्वारा बख्शिश किये महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं और इसी की रौशनी में सिक्खों की सिरमौर संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए कार्य करती है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी प्राकृतिक आपदा के समय मानवता की सेवा में हमेशा तत्पर रही है और आवश्यकतानुसार ज़रूरतमंदों की सहायता के लिए कपड़े, राशन तथा अन्य जरूरी सामान मुहैया करवाती रही है। एडवोकेट धामी ने कहा कि तुर्की और सीरिया में आए भूकंप से बड़ा जानी और माली नुकसान होने के कारण वहां बसते नागरिकों के साथ हमारी गहरी सहानुभूति है। उन्होंने कहा कि वे ऐसे समय में लोगों के दुख में शरीक हैं और वहाँ की सरकारों को सिक्ख संस्था द्वारा सहायता की पेशकश करते हुए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के साथ तालमेल बनाए रखने की अपील करते हैं।

Registered with RNI at No. PUNHIN/2007/21665
Postal Registration No. L-1/PB-ASR/008/2023-25 Licensed to Post without Pre-Payment No. PB/R-001/2023-25

GURMAT GYAN March 2023

DHARAM PARCHAR COMMITTEE,

Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee, Sri Amritsar Sahib (PUNJAB)

गुरुद्वारा बुर्ज अकाली फूला सिंघ जी, श्री अमृतसर साहिब

Owner : Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee. Publisher & Printer : S. Manjit Singh. Printed at Golden Offset Press, Gurdwara Sri Ramsar Sahib, Sri Amritsar. Published from SGPC office, Teja Singh Samundri Hall, Sri Amritsar. Editor : Satwinder Singh
Date: 7-3-2023